



अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

प्रवृत्ति को छोड़ना
कठिन है, परंतु प्रवृत्ति में होने
वाली आसक्ति को छोड़ा जा
सकता है। फिर प्रवृत्ति तुम्हारी
आत्मा को मलिन बनाने वाली
नहीं बनेगी।
- आचार्य श्री भिक्षु

नई दिल्ली | वर्ष 25 | अंक 52 | 30 सितम्बर-06 अक्टूबर, 2024 | प्रत्येक सोमवार | प्रकाशन तिथि : 28-09-2024 | पेज 16 | ₹ 10 रुपये



मद और शोक दोनों में रखें समता : आचार्यश्री महाश्रमण

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के 49वें राष्ट्रीय अधिवेशन 'संरक्षणम्' का हुआ शुभारंभ

सूत्र।

20 सितम्बर, 2024

अध्यात्म साधना के परम साधक आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि मनुष्य जीवन में लाभ और अलाभ की बात होती है। साधु को लाभ की स्थिति में ज्यादा प्रसन्नता तथा अलाभ में बहुत ज्यादा शोक नहीं करना चाहिए। साधु को मद और शोक दोनों से भी बचने का, समता भाव रखने का प्रयास करना चाहिए। साधु को आहार नहीं मिले तो सोचे कि कोई खास बात नहीं, मेरे तपस्या हो जायेगी। दोनों स्थितियों में साधु को समता रखनी चाहिये। अर्हत वन्दना का सूत्र है- 'लाभालाभे सुहे-दुक्खे, जीविए मरणे तथा समो निन्दा-पसंसासु तथा माणावमाणओ।'

आगम वाणी के कुछ सूत्र अर्हत वन्दना में हैं। लाभ-अलाभ, सुख-दुःख, निन्दा-प्रशंसा, मान और अपमान इन द्वंदात्मक स्थितियों में सम रहने की प्रेरणा दी गई है। साधु को समतामूर्ति,



क्षमामूर्ति, त्यागमूर्ति, अहिंसामूर्ति, दयामूर्ति, यथार्थमूर्ति, महाव्रतमूर्ति होना चाहिए। गृहस्थों को भी समता का भाव रखना चाहिये। समता की साधना अपने आप में जाना है। राग-द्वेष विषमता की स्थितियां हैं।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्वावधान में सेवा साधक श्रेणी के त्रिदिवसीय शिविर का प्रथम आयोजन

पूज्य सन्निधि में हुआ। महासभा अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया तथा राष्ट्रीय संयोजक किशनलाल डागलिया ने इस संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किए। आचार्यप्रवर ने पावन आशीष प्रदान करते हुए कहा कि जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्वावधान में सेवा साधक श्रेणी की परियोजना सामने आई है। समाज में अनेक गतिविधियां हैं,

मानव जीवन में धार्मिक-आध्यात्मिक अच्छी साधना भी चले और धार्मिक-आध्यात्मिक सेवा देने का भी प्रयास हो। श्रीडूंगरगढ़ से समागत संघ पूज्यवर की सन्निधि में पहुंचा, इस संदर्भ में विकास परिषद के सदस्य बन्नेचन्द मालू ने अपनी भावना श्री चरणों में प्रस्तुत की। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की राष्ट्रीय अध्यक्ष सरिता डागा

ने आचार्य प्रवर की सन्निधि में 49वें राष्ट्रीय अधिवेशन 'संरक्षणम्' के शुभारंभ की घोषणा की। महिला मंडल की बहनों ने अभिवन्दना गीत की प्रस्तुति दी। पूज्यवर ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि समाज में पुरुष और स्त्री दोनों का अस्तित्व होता है। दोनों का समाज निर्माण में योगदान रहता है। गुरुदेव तुलसी ने अनेक अवदान दिये, उनमें से एक था नया मोड़। अभातेममं तेरापंथ समाज की महिलाओं का संगठन है, इसके माध्यम से महिलाओं का विकास हुआ है। धर्म के क्षेत्र में पुरुषों से ज्यादा महिलाएं अग्रसर होती हैं। महिलाओं में श्रद्धा भावना अच्छी होती है। 'संरक्षणम्' के अन्तर्गत कन्याओं की सुरक्षा हो, उनमें अच्छे संस्कारों का विकास हो। महिलाओं में शिक्षा, चिन्तन शक्ति का विकास हो तो वे नेतृत्व भी कर सकती हैं। इस संस्था को साध्वीप्रमुखा श्री कनकप्रभाजी का अतीत में एवं वर्तमान में साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी से अच्छा मार्गदर्शन मिल रहा है।

(शेष पेज 12 पर)

मानव जीवन पाकर धर्म को ना करें इग्नोर : आचार्यश्री महाश्रमण



सूत्र।

23 सितम्बर, 2024

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आयारो आगम की व्याख्या करते हुए फरमाया कि आयुष्य को बढ़ाया नहीं जा सकता। आदमी के मन में कामनाएं बहुत ज्यादा हैं और जीवनकाल काफी सीमित है। किसी को सौ पार का आयुष्य भी प्राप्त हो जाए और किसी को पचास भी नहीं आ पाता है, आयुष्य की निश्चितता नहीं है।

आदमी को ध्यान देना चाहिए कि यह मनुष्य जन्म दुर्लभ है, धर्म की दृष्टि से यह मनुष्य जन्म उत्कृष्ट है। जो साधना इस मनुष्य जीवन में की जा सकती है वह अन्य योनि में नहीं की जा सकती है। मनुष्य में तो पहले से लेकर चौदहवां गुण स्थान हो सकता है, अन्य गतियों में यह संभव नहीं है। सौभाग्य से मानव जीवन प्राप्त

हो गया है तो ऐसा कार्य करना चाहिए कि अब उसे अधोगति में नहीं जाना पड़े। आदमी धर्म का जीवन जीने का प्रयास करे, अगर पाप कर्म करेगा तो आगे उसे दुर्गति में जाना पड़ सकता है।

सब साधु बन जाएं यह मुश्किल है। गार्हस्थ्य में रहते हुए भी समता-शांति, धार्मिकता और संयम से युक्त जीवन जीने का प्रयास करना चाहिए। गृहस्थ का अपना कर्तव्य हो सकता है पर कर्तव्य को निभाते हुए भी आदमी धर्म को इग्नोर न करे। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये चार कर्म चतुष्टय हैं। मनुष्य झूठ व चोरी से बचे। गृहस्थ जीवन में अहिंसा रहे, अनावश्यक हिंसा से बचाव का प्रयास हो। जीवन में गुस्सा न हो, संयम और सादगी रखने का प्रयास करें, धर्म की उपासना करें। कल की चिंता में आज का दिन नहीं खोयें, जागरूकता से जीवन जीएं। धर्म का टिफिन साथ में रहे, जितना जीवन काल है, हमें धर्म के रास्ते पर चलने का प्रयास करना चाहिये।

साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि भारतीय दर्शन में दो प्रकार की परम्परा रही है- नास्तिक और आस्तिक।

आस्तिकवाद आत्मवाद, कर्मवाद व पुनर्जन्म में विश्वास करता है। नास्तिकवाद इनमें विश्वास नहीं करता है। उनका मानना है कि जो वर्तमान है, वही है। कुछ लोग जैन दर्शन को भी नास्तिक मानते हैं कि जैन दर्शन ईश्वर में विश्वास नहीं करता। पर उन्होंने जैन दर्शन की गहराई को नहीं जाना है। जैन दर्शन में ईश्वर को स्वीकार किया है, पर उनकी अलग व्याख्या की है।

जैन दर्शन कर्ता के रूप में ईश्वर को नहीं मानता। वह जीव की परम अवस्था, आत्मा के शुद्ध स्वरूप मोक्ष को ही ईश्वर मानता है। जैन दर्शन का ईश्वर परम ज्योति है। जैन दर्शन कर्म में विश्वास करता है तो पुनर्जन्म में भी विश्वास करता है। साध्वी श्रुतप्रभाजी ने सुमधुर गीत की प्रस्तुति दी।

(शेष पेज 12 पर)

इच्छा को कम, लोभ का क्षय तथा संतोष धारण करने का हो प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।

22 सितम्बर, 2024

शान्ति का सन्देश प्रदान करने वाले युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि काम का अतिक्रमण करना मुश्किल होता है। काम का अर्थ कार्य करना भी होता है, कामना करना भी है और इन्द्रिय विषयों का सेवन भी होता है। यहां काम का अर्थ कामना से बताया है कि पदार्थों का संग्रह करना कामना है। काम के दो प्रकार- इच्छा और मदन। सोना, चांदी आदि पदार्थों को प्राप्त करने की कामना इच्छा कहलाती है।

मदन का अर्थ है- शब्द, रूप, रस, गंध, स्पर्श के भोग की कामना। काम एक संज्ञा है, इसको लांघना मुश्किल होता है क्योंकि काम की संज्ञा अनंतकाल से प्राणी के भीतर रहती है। इच्छाओं को कम करना, लोभ का क्षय तथा संतोष को धारण करना बड़ा कठिन काम होता है। लोभ को पाप का बाप कहा जाता है।



राग का अंग लोभ है। लोभ के कारण ही कई पाप होते हैं, लोभ दुःख का कारण भी होता है। कामानुवृद्धि से दुःख पैदा होता है। जो वीतराग बन जाता है, वह दुःख का पार पा जाता है। साधना की गहराई में जाने वाला साधक कामनाओं का पार पा लेता है। काम का अतिक्रमण

हो तो कामना भी कम हो जायेगी। भौतिक इच्छाओं पर सीमाकरण करना चाहिये। तीन बातों पर संतोष करना चाहिये- स्वदार, भोजन और धन में। तीन बातों में संतोष नहीं करना चाहिये- अध्ययन, जप और दान में। दान लौकिक और लोकोत्तर हो सकता है। सुपात्र दान धर्म का, गरीब

को दान दया भाव बढ़ाने का, मित्र को दान प्रीति का कारण बन सकता है। ज्ञान दान और अभयदान आध्यात्मिक दान है। काम का अतिक्रमण मुश्किल है, पर हम मुश्किल कार्य को करने का प्रयास करें। भारतीय जनता पार्टी गुजरात प्रदेशाध्यक्ष एवं केन्द्रीय जल शक्ति मंत्री

सी. आर. पाटिल पूज्यवर की सन्निधि में पहुंचें। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा- आचार्यजी समाज को नीति पर चलने की प्रेरणा देते हैं। राजनीति में भी मूलभूत भावना सेवा की है। राजनेता को धर्म पर आस्था रखनी होगी तभी वह नीति पर चल सकेगा, जिससे देश और समाज का भला हो सकेगा। आप नशामुक्ति के लिए भी जन-जन को प्रेरित कर रहे हैं। मैं ऐसे आचार्यश्री को बारम्बार प्रणाम करता हूं।

आचार्यप्रवर ने उन्हें आशीष प्रदान करते हुए कहा कि आज जलशक्ति मंत्रीजी का आना हुआ है। जल की बात है तो जल को रत्न की संज्ञा प्रदान की गयी है। धरती पर तीन रत्न हैं- जल, अन्न और सुभाषित। जैन दर्शन में कहा गया है कि जल भी जीव है, उसके प्रति अहिंसा का भाव रखें। हम सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति की प्रेरणा देते हैं। आचार्यश्री तुलसी ने अणुवत के छोटे-छोटे नियमों से लोगों को सत्यथ की प्रेरणा दी। राजनीति में भी नैतिकता बनी रहे। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

कालूगणी के जीवन से पाएं प्रेरणा : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।

18 सितम्बर, 2024

भाद्रव शुक्ला पूर्णिमा, अष्टमाचार्य पूज्य कालूगणी का पट्टोत्सव का दिन। पूज्य कालूगणी के परम्पर पट्टधर आचार्य श्रीमहाश्रमणजी ने पूज्य कालूगणी के प्रति श्रद्धा समर्पित करते हुए फरमाया कि हमारे धर्मसंघ में भाद्रव महीने में अनेक दिवस ऐसे आते हैं, जो महत्ता के दिन होते हैं।

भाद्रव कृष्णा द्वादशी पूज्य जयाचार्य का महाप्रयाण दिवस है। पर्वाधिराज पर्युषण पर्व, भगवती संवत्सरी एवं क्षमापना दिवस भी भाद्रव माह से जुड़े हुए हैं। हमारी परम्परा में भले श्रावण दो हो पर पर्युषण पर्व तो भाद्रव महीने में ही मनाया जाता है। भाद्रव शुक्ला तृतीया के दिन पूज्य कालूगणी का महाप्रयाण भी हो गया था।

भाद्रव शुक्ला नवमी को आचार्य तुलसी विधिवत पाट पर विराजे थे, जिसे हम वर्तमान में विकास महोत्सव के रूप में मनाते हैं। भाद्रव शुक्ला द्वादशी का दिन तीन प्रसंगों से जुड़ा है- इस

दिन आचार्य भिक्षु ने अनशन स्वीकार किया था, लाडनूं में सप्तमाचार्य पूज्य डालगणी का महाप्रयाण हुआ था, आज ही के दिन पूज्य आचार्य श्री महाप्रज्ञजी ने मुझे युवाचार्य पद पर प्रतिष्ठापित किया था। भाद्रव शुक्ला पूर्णिमा को पूज्य अष्टमाचार्य कालूगणी को विधिवत आचार्य पद पर प्रतिष्ठापित किया गया था। पूज्य कालूगणी का 27 वर्षों का आचार्य काल रहा था। आपने सिर्फ एक चतुर्मास भिवानी में किया था, शेष सारे चतुर्मास राजस्थान में ही किये थे। मर्यादा महोत्सवों में भी एक मर्यादा महोत्सव मालवा में किया था, शेष सभी मर्यादा महोत्सव राजस्थान में ही किये थे। राजस्थान का सौभाग्य रहा कि वहां पूज्य कालूगणी का लम्बा प्रवास हुआ।

पूज्य कालूगणी का जन्म विक्रम संवत् 1933 फाल्गुन शुक्ला द्वितीया को छपर में हुआ था। गुरुदेव तुलसी ने विक्रम संवत् 2033 कालू जन्म शताब्दी छपर में आयोजन करवाया था। उस समय छपर में अच्छी संख्या में साधु-साध्वियां उपस्थित थे, कालूगणी के करकमलों से दीक्षित कई साधु-



साध्वियां भी थे।

काल बीतता है, इतिहास हो जाता है तो नया इतिहास बनता जाता है। हम लोगों ने गुरुदेव तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञजी आदि के अनेक संतो-साध्वियों को देखा है। कालूगणी द्वारा दीक्षित दो सुशिष्य हमें आचार्य रूप में मिले। कालूगणी के समय हमारे धर्मसंघ में संस्कृत भाषा का विकास हुआ था।

हम कालूगणी का स्मरण करें, उनके जीवन से हमें प्रेरणाएं मिलती रहे।

साध्वीवर्याजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि रोहिण्य के पैर में बाह्य कांटा भी चुभा तो आभ्यंतर कांटा भी चुभा था। भीतर का कांटा जन्म-जन्मान्तर तक पीड़ा देता है।

मिथ्यादर्शन शल्य आत्म पतन का कारण बनता है। सम्यक्त्व से आत्म

कल्याण होता है। मिथ्यात्व मोहनीय कर्म के उदय से होता है। मिथ्यात्व के तीन कारण होते हैं- तत्व के प्रति श्रद्धा नहीं होना, देव-गुरु-धर्म के प्रति श्रद्धा नहीं होना एवं आग्रह। तेरापंथ किशोर मंडल, कन्यामंडल ने चौबीसी के गीत का संगान किया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।



अशुद्ध साधन के द्वारा नहीं हो सकती साध्य की प्राप्ति

तमिलनाडु स्तरीय भिक्षु दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

माधावरम, चेन्नई।

साध्वी डॉ. गवेषणाश्रीजी ठाणा-4 के सान्निध्य में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में निर्देशित तमिलनाडु स्तरीय भिक्षु दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा की अध्यक्षता में तेरापंथ युवक परिषद चेन्नई ने आयोजित किया। कार्यक्रम की शुरुआत सामूहिक मंगलाचरण एवं विजय गीत से हुई। तत्पश्चात अध्यक्ष संदीप मुथा ने सभी का स्वागत एवं अभिनंदन किया।

साध्वीश्री ने श्रावक समाज को आचार्य भिक्षु के जीवन दर्शन से अवगत करवाते हुए कहा- आचार्य भिक्षु रहस्य पुरुष थे, उनके विचारों की गहराई विहंगवावलोकन से नहीं मापी जा सकती।

उन्होंने जो व्याख्याएं दी उनमें वास्तविक सच्चाई है। आचार्य भिक्षु की सिद्धांत वाणी का स्पर्श किया जाए तो उनके मौलिक निष्कर्ष थे- धर्म अधर्म का मिश्रण नहीं होता, अशुद्ध साधन के द्वारा साध्य की प्राप्ति नहीं हो सकती। सिद्धांतों का विस्तार से विश्लेषण करते हुए साध्वीश्री ने कहा, बड़े जीवों के लिए छोटे जीवों का घात करना पुण्य नहीं है, अहिंसा और दया सर्वथा एक है। हिंसा से धर्म संभव नहीं।

साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा- आचार्य भिक्षु संघ व्यवस्था के महान प्रवर्तक थे।



संघ व्यवस्था पर अवलंबित है। आचार्य भिक्षु ने तेरापंथ संघ को संगठित किया, उसकी सुव्यवस्था के लिए अनेक मर्यादाएं निर्धारित की, जैसे अपने शिष्य-शिष्या ना बनाएं, सब साधु साध्वियां एक आचार्य की आज्ञा में रहे। साध्वी मेरुप्रभा जी ने 'यह संघ हमारा मथुरा काशी, अखंड तीर्थ समाये' सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की। साध्वी दक्षप्रभा जी ने आचार्य भिक्षु के सिद्धांतों से संबंधित गीतिका का संगान किया।

साध्वीश्री के वक्तव्य के पश्चात भिक्षु दर्शन से संबंधित प्रतियोगिता में आयोजित की गई जिसमें सबसे ज्यादा अंक प्राप्त करने वाले दस प्रतियोगियों को सम्मानित किया गया। कोलकाता से पधारे कार्यशाला

के राष्ट्रीय सहप्रभारी सूर्यप्रकाश डागा, मदुरै से पधारे परिषद प्रभारी नितेश कोठारी एवं माधावरम ट्रस्ट के अध्यक्ष घीसुलाल बोहरा, अभातेयुप सदस्य कोमल डागा, संतोष सेठिया, दिलीप गेलड़ा सहित कई संघीय संस्थाओं एवं परिषदों के पदाधिकारी गण, तेयुप चेन्नई के अनेक कार्यकारिणी सदस्य एवं किशोर मंडल के किशोरों सहित काफी संख्या में श्रावक समाज की उपस्थिति रही। मदुरै से 71 श्रावकों का समूह इस कार्यशाला में भाग लेने के लिए आया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन संयोजक दिलीप गेलड़ा ने किया। कार्यक्रम के अंत में मंत्री सुरेश तातेड ने आभार प्रकट किया।

संधारा साधना है जीवन की उत्कृष्ट साधना

रायपुर।

रायपुर के टटीबंध स्थित शांतिनाथ नगर प्रवासी संधारा साधिका शांति देवी बैद के संधारा अनुमोदना का विशेष आयोजन किया गया। मुनि सुधाकरजी ने कहा कि शांति देवी बैद ने संधारा स्वीकार किया है। अनशन व्रत जैन समाज की विशेष साधना है, जिसमें व्यक्ति आत्मा और शरीर की भिन्नता का अनुभव करता है।

एक अवस्था के बाद या किसी लंबी बीमारी या अत्यंत तप कर रहे हैं, साथ में वे करीब 50 वर्ष से सत्रि में चौविहार त्याग कर रहे हैं। इन्होंने अपने जीवन में नाना प्रकार की साधनाएं की हैं, तपस्या की है और निरंतर वर्षों से वह साधना तपस्या करते हुए कहा की संधारा और आत्महत्या में अंतर होता है। कई बार यह गलती होती है की संधारा और आत्महत्या को एक मान लिया जाता है। आत्महत्या आवेश में होती है जबकि संधारा तब होता है जब मन में संसार के प्रति ममत्व के विसर्जन की भावना जागृत होती है। मन में किसी प्रकार की इच्छा, लालसा नहीं होती है। कोई राग-द्वेष नहीं होता है। जब यह

किसी जैन श्रावक को अनुभव हो जाता है कि यह शरीर पोषण के लायक नहीं है। उसे शरीर को अध्यात्म के मार्ग पर, त्याग और वैराग्य मार्ग पर प्रशस्त कर देना चाहिए। विशेष बात यह है साधना एक दिन में समाप्त नहीं होती है। संधारे से पूर्व संलेखना की जाती है। मुनिश्री ने बताया की आचार्य श्री महाश्रमण के आशीर्वाद से शांति देवी बैद ने 9 दिन पूर्व अन्य जल त्याग दिया है। 31 वर्षों से निरंतर एकांतर तप कर रहे हैं, साथ में वे करीब 50 वर्ष से सत्रि में चौविहार त्याग कर रहे हैं। इन्होंने अपने जीवन में नाना प्रकार की साधनाएं की हैं, तपस्या की है और निरंतर वर्षों से वह साधना तपस्या करते हुए कहा की संधारा और आत्महत्या में अंतर होता है। कई बार यह गलती होती है की संधारा और आत्महत्या को एक मान लिया जाता है। आत्महत्या आवेश में होती है जबकि संधारा तब होता है जब मन में संसार के प्रति ममत्व के विसर्जन की भावना जागृत होती है। मन में किसी प्रकार की इच्छा, लालसा नहीं होती है। कोई राग-द्वेष नहीं होता है। जब यह

अध्यात्म का उज्ज्वल पथ है तप

साउथ हावड़ा।

मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में तप अभिनंदन समारोह का आयोजन प्रेक्षा विहार में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा साउथ हावड़ा द्वारा किया गया। इस अवसर पर हार्दिक दुगड़ के मासखमण तप अभिनंदन के साथ-साथ लगभग 35 तपस्वियों का अभिनंदन किया गया।

मुनिश्री ने कहा आत्म साधना के चार उपाय हैं- ज्ञान, दर्शन, चरित्र, तप। जीव तप से परिशुद्ध होता है। तप अध्यात्म का उज्ज्वल पथ है। तप से पूर्वाजित कर्मों का क्षय होता है। तप इन्द्रिय विजय का सुगम पथ है। तप की सरिता में जो न्हाता है उसका निस्तार हो जाता है। तप रोग मिटाने की औषध है, शक्ति व शांति प्रदायक है। आचार्य प्रवर की कृपा से तपस्या का

अच्छा वातावरण निर्मित हुआ है। हार्दिक दुगड़ ने 19 वर्ष की उम्र मासखमण कर साहस व हिम्मत का परिचय दिया है। तपस्या में विवेक भी जरूरी है, घर की अनुकूलता व संतों की प्रेरणा भी काम आती है। इस अवसर पर साध्वीप्रमुखाश्री द्वारा मासखमण तपस्वी को प्रदत्त संदेश का वाचन पूर्वाचल सभा के अध्यक्ष संजय सिंघी ने किया। स्वागत भाषण साउथ हावड़ा सभा के अध्यक्ष लक्ष्मीपत बाफणा ने दिया। तप अनुमोदना में विजय सिंह दुगड़ ने अपने विचार व्यक्त किये। कुछ दिन पूर्व मासखमण तप करने वाली मनीषा गोलछा ने अपने अनुभवों के साथ विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंदजी ने व तप सम्मान उपक्रम का संचालन मंत्री बसंत पटावरी ने किया। सभा द्वारा तपस्वियों सम्मान किया गया।

प्रेरणा और प्रकाशदायक है भगवान महावीर की जीवनी

दादर (मुंबई)।

'शासनश्री' साध्वी विद्यावतीजी 'द्वितीय' ठाणा 5 के सान्निध्य में पर्युषण पर्व का शिरोमणि दिवस संवत्सरी महापर्व मनाया गया। तेरापंथ कन्या मंडल के मंगलाचरण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।

सर्वप्रथम साध्वी प्रेरणाश्रीजी ने भक्तामर का पाठ कर प्रेक्षाध्यान का प्रयोग करवाया। तत्पश्चात् उत्तराध्ययन सूत्र पर प्राक् वक्तव्य दिया। साध्वी विद्यावतीजी ने भगवान महावीर के जन्म से लेकर निर्वाण तक का सुंदर चित्र प्रस्तुत किया। साध्वीश्री ने कहा-

भगवान महावीर क्षमासूर थे, उन्होंने संगम द्वारा दिये गये बीस मारणांतिक कष्टों एवं उपसर्गों को भी समभाव से सहन किया।

भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा स्वयं के लिए एवं संसार के लिए वरदान रूप में सिद्ध हुई। साध्वी प्रियंवदाजी ने कहा- भगवान महावीर की जीवनी प्रकाशदायक एवं प्रेरणादायक है। चौंतीस अतिशय एवं पैंतीस वचनातिशय से युक्त उनका जीवन विलक्षण था।

साध्वी मृदुयशाजी ने जैन धर्म के प्रभावक आचार्यों पर प्रकाश डाला, गणधरवाद का सुंदर चित्रण करते हुए संवत्सरी की महत्ता बताई।

साध्वी ऋद्धियशाजी ने आगम युग के प्रभावशाली आचार्यों के जीवन से जनता को अवगत कराया। लोकेश जैन ने गीत का संगान किया।

अंत में साध्वी विद्यावतीजी ने तेरापंथ की आचार्य परंपरा का विवेचन करते हुए कहा- वर्तमान में आचार्य श्री महाश्रमण जी तेरापंथ धर्मसंघ का कुशल नेतृत्व कर रहे हैं। सद्भावना, नैतिकता एवं नशामुक्ति का प्रचार- प्रसार कर जनता का आत्मोत्थान कर रहे हैं।

कृष्णा हॉल में आयोजित प्रवचन में दादर, वडाला, कुर्ला, माटुंगा, धारावी, सायन आदि क्षेत्रों के भाई-बहनों की सराहनीय उपस्थिति रही।



मानव को मानव बनने के लिए प्रेरित करता है अणुव्रत

दिल्ली।

पर्युषण महापर्व का पाँचवा दिवस अणुव्रत चेतना दिवस। अणुव्रत समिति ट्रस्ट ने सभी चारित्रात्माओं के सान्निध्य में अणुव्रत चेतना दिवस मनाया :-

1. तेरापंथ भवन, रोहिणी में 'शासनश्री' मुनि विमलकुमार जी ने कहा कि हर व्यक्ति को अणुव्रत अपने जीवन में उतारना चाहिए। मुनि अक्षयकुमारजी एवं मुनि धन्यकुमारजी ने व्रतों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा जीवन को सुधारने के लिए छोटे-छोटे नियम अपनाने चाहिए। अणुव्रत विश्व भारती की संगठन मंत्री डॉ. कुसुम लुनिया ने अपने विचारों में अणुव्रत के बारे में विस्तार से बताते हुए अपने द्वारा लिखित पुस्तक 'सर्वोत्तम जीवनशैली' डॉ. धनपत लूनिया, दिल्ली समिति मंत्री राजेश बैंगानी के साथ मुनिश्री को भेंट की। अणुव्रत समिति दिल्ली के संरक्षक सदस्य राजेन्द्र सिंघी, मदन लाल जैन, प्रवीण बैद इत्यादि ने अणुव्रत गीत का संगान किया।

2. ग्रीन पार्क के गोयल आस्था भवन में 'शासनश्री' साध्वी संघमित्रा जी ने व्रत के उपयोग बताते हुए कहा हम जीवन में जितना त्याग संयम की पालना करेंगे उतना ही हमारा जीवन उत्कृष्ट होगा। दिल्ली समिति के सदस्य सुशील डागा द्वारा जनता को अणुव्रत संकल्पों को स्वीकार करने की प्रेरणा तथा अणुव्रत पत्रिका, बच्चों का देश पत्रिका के बारे में जानकारी दी गई।

3. तेरापंथ भवन महारौली में 'शासनश्री' साध्वी सुव्रताजी ठाणा-4 ने कहा कि अणुव्रत का प्रचार-प्रसार अधिक से अधिक लोगों के मध्य हो। व्यक्ति की चेतना का जागरण छोटे-छोटे नियमों के माध्यम से होता रहे। 'शासनश्री' साध्वी सुमनप्रभा जी ने भी व्रत, संयम पर बल देते हुए कहा कि हमें अपने भीतर की चेतना को जागृत करके हर बुराई से बचना है। साध्वी वृन्द ने मधुर गीतिका से सबको सम्मोहित किया। अणुव्रत गीत का संगान आचार्य तुलसी सर्वोदय विद्यालय के विद्यार्थियों ने किया। दिल्ली समिति के

सहमंत्री मनोज खटेड़, कल्पना सेठिया ने भी अणुव्रत के विषय पर अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए।

4. तेरापंथ भवन कृष्णा नगर में विराजित 'शासनश्री' साध्वी रविप्रभा जी ने गुरुदेव तुलसी के महान अवदान अणुव्रत पर विशेष प्रेरणा देते हुए बताया कि हम संकल्पों के द्वारा अपने जीवन की दशा-दिशा को बदल सकते हैं। दिल्ली समिति मीडिया प्रभारी ऋषभ बैद ने अणुव्रत के चल रहे प्रकल्पों की जानकारी के साथ साथ सभी से अणुव्रत से जुड़ने का आह्वान किया।

5. तेरापंथ भवन शास्त्री नगर में 'शासनश्री' साध्वी ललितप्रभा जी ने अणुव्रत के नियमों को बताते हुए कहा हमें जीवन में कुछ हासिल करना है तो नियमों की पालना करनी पड़ेगी। व्रत, संकल्प, संयम के द्वारा ही हम अपने अन्दर ऊर्जा का संचार कर सकते हैं। दिल्ली अणुव्रत समिति सदस्यों द्वारा अणुव्रत गीत का संगान किया गया।

6. खिलौनी देवी धर्मशाला पीतमपूरा

में साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि जितना हम संयम, व्रतों का पालन करेंगे, उतना ही हम नैतिकता, प्रामाणिकता, मैत्री, सद्भाव के गुणों को अपने भीतर महसूस करेंगे। अणुव्रत विश्व भारती के मुख्य न्यासी तेजकरण सुराना ने अणुव्रत के नियमों, प्रकल्पों की जानकारी रखी। दिल्ली समिति अध्यक्ष मनोज बरमेचा आदि ने अणुव्रत गीत का संगान किया।

7. ओसवाल भवन विवेक विहार में साध्वी संगीतश्री जी ने कहा कि अणुव्रत को अपनाकर व्यक्ति ना केवल अपना निर्माण कर सकता है अपितु राष्ट्र निर्माण में भी सहयोगी बन सकता है। आज हर जगह भ्रष्टाचार, अराजकता का दूषित वातावरण है, अणुव्रत ही एक ऐसा आयाम है जो दुनिया को नैतिकता, सद्भावना, नशामुक्ति की बात समझाता है। अणुव्रत विश्व भारती के महामंत्री भीखमचन्द्र सुराना ने अपने वक्तव्य में व्रतों और अणुव्रत के बारे में विस्तार से बताया। दिल्ली समिति संगठन मंत्री राजीव महनोत एवं समिति के सदस्यों ने

अणुव्रत गीत का संगान किया।

8. अणुव्रत भवन में विराजित साध्वी डॉ. कुन्दनरेखा जी ने कहा - एक अणुव्रत ही ऐसा आयाम है जो मानव को मानव बनने के लिए प्रेरित करता है। विद्यार्थी जीवन से ही उनमें नैतिकता का जागरण आरम्भ करके उनका जीवन संवारने का कार्य अणुव्रत ही करता है। दिल्ली समिति सहमंत्री पवन गिड़िया एवं सदस्यों ने अणुव्रत गीतिका का संगान किया तथा अणुव्रत के बारे में विस्तृत जानकारी भी दी।

9. तेरापंथ भवन पश्चिम विहार में विराजित साध्वी लब्धिप्रभा जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि हमारी सोच, हमारी जीवन शैली हम खुद तय करते हैं। जितना हम संयम, व्रत इत्यादि का पालन करेंगे उतना ही हमारे चरित्र का निर्माण उन्नत होगा। अणुव्रत विश्व भारती के पत्रिका संयोजक सुरेन्द्र नाहटा ने अणुव्रत की जानकारी प्रदान की। दिल्ली समिति के उपाध्यक्ष कमल बैंगानी एवं सदस्यों द्वारा अणुव्रत गीत का संगान किया।

संक्षिप्त खबर

शिक्षक दिवस के उपलक्ष में स्वास्थ्य जांच शिविर

राजाजीनगर। शिक्षक दिवस के उपलक्ष में तेरापंथ युवक परिषद् राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर श्रीरामपुरम द्वारा मानव सेवा के अंतर्गत शिक्षक दिवस के उपलक्ष में रियायती दर पर स्वास्थ्य जांच शिविर का समायोजन एम. ई. एस. कॉलेज, मल्लेश्वरम में किया गया, जिसमें सम्पूर्ण रक्त गणना, थायरॉइड जांच एवं मधुमेह से संबंधित कुल 18 जांचें एवं विटामिन डी, विटामिन बी 12 की जांचें समाहित की गईं। तेयुप अध्यक्ष कमलेश चोरडिया ने एटीडीसी श्रीरामपुरम द्वारा प्रदत्त विभिन्न सेवाओं, डॉक्टर की उपलब्धता एवं अन्य जानकारी से अवगत कराया एवं शिविर आयोजन हेतु आभार व्यक्त किया। शिविर के सुव्यवस्थित आयोजन में राजेश देरासरिया, मुकेश भंडारी, अभिषेक पिपाडा एवं किशोर मण्डल का विशेष श्रम नियोजित हुआ।

कैंसर जागरूकता अभियान के तहत प्रतियोगिता का आयोजन

जसोल। अभातेमम के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल जसोल द्वारा मुनि यशवंत कुमार जी के सान्निध्य में कैंसर जागरूकता अभियान के तहत कैंसर लोगो और स्लोगन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। मंत्री अरुणा डोसी ने बताया कि कुल आठ सदस्यों ने पोस्टर प्रतियोगिता में भाग लिया। निर्णायक भूमिका तेरापंथ सभा के मंत्री धनपत संकलेचा, तेरापंथ युवक परिषद के कोषाध्यक्ष अभिनन्दन सालेचा ने निभाई। अध्यक्ष कंचन देवी ने निर्णायक महोदय का आभार ज्ञापन किया। प्रतियोगिता में विजेता रही ललिता मेहता को स्मृति चिन्ह एवं प्रतिभागियों को सांत्वना पुरस्कार दिया गया।

कर्म संस्कार से मुक्त होने का मार्ग : तपस्या

मण्डिया।

साध्वी संयमलताजी के सान्निध्य में तप अनुमोदना समारोह का आयोजन स्थानीय तेरापंथ भवन मण्डिया में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का मंगलाचरण चामराजनगर, महिला मंडल ने किया। साध्वीश्री ने कहा- भारत अनादि काल से योग भूमि के रूप में विख्यात रहा है। तपस्या शक्ति है, कर्म संस्कार से मुक्ति है। संगीता दक के 15, संतोष जैन के 10, लिखित चौपड़ा

एवं राजेश्वरी कटारिया के 9 की तपस्या पर साध्वीश्री ने विचार व्यक्त करते हुए कहा- तपस्या दो प्रकार की शक्ति से होती है- एक गुरु की, एक आत्मा की। इन तपस्वियों ने दोनों प्रकार की शक्तियों कि साधना की है, आगे भी ऐसी ही शक्ति लगाते रहे। तपस्वियों के परिवारों ने समूह गीत का संगान किया। साध्वी मार्दवश्रीजी ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए कहा आहार एवं अनाहार में अनाहार की साधना शक्तिशाली होती है। अनेक उदाहरण हैं जहां तपस्या से

आखों की खोई शक्ति पुनः लौट आयी। एक मात्र अनाहार से कैंसर जैसी बिमारी ठीक हो गई। तप से शरीर की शुद्धि एवं आत्मा की मुक्ति होती है। कार्यक्रम में चामराजनगर, श्रीरंगपट्टना, पाढंवपुरा, के. आर. नगर, दावनगरे, मैसुरु, बैंगलोर से श्रावकों की अच्छी उपस्थिति रही।

तपस्वियों की अनुमोदना में आयोजित रात्रिकालीन धम्मजागरणा में बैंगलोर से आदित्य एवं यश सेठिया, व मण्डिया से रितु दक ने सभी को संगीत से मंत्रमुग्ध बना दिया।

अणुव्रत काव्यधारा का भव्य आयोजन

समिति हावड़ा।

मुनि जिनेशकुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में अणुव्रत समिति हावड़ा द्वारा अणुव्रत काव्यधारा का आयोजन प्रेक्षा विहार में किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ अणुव्रत समिति हावड़ा की महिला सदस्यों के मंगलाचरण के साथ हुआ। मुनि जिनेशकुमार जी ने कहा कि छोटे-छोटे व्रतों को धारण करना अणुव्रत है। गुरुदेव तुलसी ने नैतिकता को स्थापित करने के लिए अणुव्रत

आंदोलन को आगे बढ़ाया इसके माध्यम से पर्यावरण, नशामुक्ति, सामाजिक रूढ़ि, भ्रूण हत्या आदि के बारे में जागरूकता बढ़ती है। हम पहले स्वयं अणुव्रती बनें फिर दूसरों को अणुव्रती बनने की प्रेरणा दें। मुनि कुणाल कुमार जी ने अणुव्रत गीत का सुमधुर संगान किया।

कार्यक्रम में सुप्रसिद्ध कविगण बंसीधर शर्मा, गजेन्द्र नाहटा, वसुंधरा मिश्र, ज्योत्सना दुगड़, शीला संचेती, सम्पत मल बरमेचा, बिंदु नखत ने अणुव्रत आचार संहिता के विभिन्न विषयों पर

अपनी प्रस्तुति दी। अणुविभा के राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रताप दुगड़ ने अपने भाव प्रस्तुत किए।

कार्यक्रम में अणुविभा के मीडिया संयोजक पंकज दुधोडिया, सदस्य विकास दुगड़ की विशेष उपस्थिति रही। कार्यक्रम के प्रायोजक सम्पतमल बरमेचा का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम में समिति के अध्यक्ष दीपक नखत ने स्वागत वक्तव्य दिया। आभार संयोजक अभिषेक खटेड़ ने एवं संचालन मंत्री बिरेंद्र बोहरा ने किया।



अष्टमाचार्य कालूगणी का 89वां स्वर्गवास दिवस मनाया

साउथ हावड़ा।

मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में प्रेक्षा विहार में अष्टमाचार्य कालूगणी का 89वां स्वर्गारोहण दिवस श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा साउथ हावड़ा द्वारा आयोजित किया गया।

इस अवसर पर उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि श्री ने कहा - आचार्य श्री कालूगणी तेरापंथ धर्म संघ के अष्टम् अधिशास्ता थे। उनका जन्म छापूर में हुआ। उनके पिता का नाम मूलचंद्रज, माता का नाम छोगाजी था। तेरापंथ के पंचम् अधिशास्ता मधवागणी के कर कमलों से कालूगणी की दीक्षा हुई। कालूगणी का जीवन निर्मल और पवित्र था। वे निस्पृह साधक, आचारनिष्ठ और

अनुशासन प्रिय थे। उनके शासन काल में बालक-बालिकाओं की अतिशय दीक्षाएं हुईं। उनके द्वारा दीक्षित दो मुनि आचार्य बने- आचार्य श्री तुलसी, आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी। आज के दिन दिन कालूगणी का गंगापुर (मेवाड़) में उनका स्वर्गवास हुआ। मुनिश्री ने उनसे सम्बंधित अनेक संस्मरण सुनाए।

इस अवसर पर मुनि परमानंदजी ने कहा- परमपूज्य कालूगणी वचन सिद्ध पुरुष थे। उनकी दूर दृष्टि से धर्मसंघ में संस्कृत शिक्षा का बहुत विकास हुआ। उनका जीवन चरित्र सभी के लिए प्रेरक बना हुआ है। मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। महासभा के पूर्व अध्यक्ष सुरेश गोयल ने कालूगणी से सम्बंधित संस्मरण सुनाया।

संक्षिप्त खबर

समृद्ध राष्ट्र योजना की तीसरी कार्यशाला संपन्न

जसोल। अभातेममं के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल जसोल द्वारा समृद्ध राष्ट्र योजना के तहत तीसरी कार्यशाला का आयोजन स्थानीय नवकार विद्या मंदिर जसोल में किया गया। मनीषा डोसी ने बच्चों को महाप्राण ध्वनि का प्रयोग करवाया और इससे होने वाले लाभ के बारे में बताया। अध्यक्ष कंचनदेवी डेलडिया ने कार्यशाला के विषय की जानकारी दी।

मंत्री अरुणा डोसी ने बताया कि रिंकू बुरड़ ने अनुशासन के बारे में बताया कि बिना अनुशासन के जीवन की कल्पना करना मुश्किल लगता है। बिना अनुशासन के व्यक्ति दिशाहीन हो जाता है। अभयमति डोसी ने जीवन में अनुशासन का महत्व बताया। स्कूल की प्रधानाचार्य किरण कोठारी ने कार्यशाला आयोजित करने के महिला मंडल का आभार ज्ञापन किया। कन्या मंडल प्रभारी सुमन कोठारी ने शिक्षकों एवं बच्चों का आभार ज्ञापन किया। कार्यशाला का संचालन रक्षा डोसी ने किया।

द्वितीय बारह व्रत कार्यशाला का आयोजन

इस्लामपुर। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में बारह व्रत कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद् इस्लामपुर द्वारा तेरापंथ भवन में उपासिका मंजु घोड़ावत एवं उपासिका अंजू सिंघी की उपस्थिति में किया गया। सामूहिक सामायिक सहित इस द्वितीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। उपासिका द्वय ने व्रतों के सन्दर्भ में श्रावक-श्राविका समाज को समझाया और जीवन में बारह व्रतों को धारण कर हिंसा से बचने की प्रेरणा प्रदान की। तेयुप मंत्री मुदित पिंचा ने उपासिका एवं सभी संभागियों के प्रति आभार प्रकट किया। कार्यशाला में कुल 38 संभागी बने।

❖ सरल व्यक्ति के जीवन में धर्म संस्थित होता है। माया अविश्वास का घर है। जहां सरलता है, वहां आत्मशुद्ध है, विश्वास भी है।

— आचार्य श्री महाश्रमण

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन

जैन विधि-अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

■ हैदराबाद। रतनगढ़ निवासी कोलकाता/हैदराबाद प्रवासी छतर अनीता दुगड़ के सुपुत्र आदित्य एवं पुत्रवधु नम्रता के सुपुत्र के नामकरण कार्यक्रम का आयोजन जैन संस्कार विधि से हैदराबाद में करवाया गया। इस कार्यक्रम में परिषद् से ललित जैन ने संस्कारक की भूमिका का निर्वहन करते हुए निर्दिष्ट विधि-विधान एवं मंगल मंत्रोच्चार से कार्यक्रम को सम्पन्न करवाया।

पर्वाधिराज पर्युषण का आयोजन

हिरियूर।

अध्यात्म चेतना के जागरण के लिए, मन की ग्रंथियों को खोलने, आत्मा के दर्शन करने तथा मोक्ष मार्ग की दिशा में आगे बढ़ने के लिए विशेष आराधना, साधना, धर्म-ध्यान की विशेष धर्माधना के महापर्व पर्वाधिराज पर्युषण का युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी पावनप्रभाजी के सान्निध्य में आध्यात्मिक रूप में तेरापंथ

सभा भवन में प्रारम्भ हुआ। नमस्कार महामंत्रोच्चार से पर्युषण पर्व के प्रथम दिन खाद्य संयम दिवस कार्यक्रम की शुरुवात हुई।

साध्वी पावनप्रभाजी ने बताया कि खाद्य संयम में मनुष्य को विवेक रखना चाहिए, खानपान पर लालसा नहीं होनी चाहिए। मनुष्य स्वाद के लिए असंयम से खान-पान नहीं करे। साध्वी आत्मयशाजी ने खाद्य संयम की विवेचना करते हुए कहा कि 15 दिन में एक उपवास करना

स्वास्थ्य की दृष्टि से भी बहुत महत्वपूर्ण है। व्यक्ति इसके माध्यम से अनेक बीमारियों से निजात प्राप्त कर सकता है। कार्यक्रम में साध्वी उन्नतयशाजी एवं साध्वी रम्यप्रभाजी ने खाद्य संयम दिवस पर भावपूर्ण अभिव्यक्ति दी। तेरापंथ भवन में पर्युषण काल में नमस्कार महामंत्र के अखंड जप अनुष्ठान में सभा, महिला मंडल, युवक परिषद्, कन्यामण्डल व ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने बह चढ़कर हिस्सा लिया।

क्षमा का विनिमय व्यक्ति को हल्का बना देता है

सिरियारी।

पर्युषण पर्व के नवान्हिक कार्यक्रम के अन्तर्गत भिक्षु समाधि स्थल परिसर में स्थित हेम अतिथि भवन में संवत्सरी महापर्व एवं क्षमापना पर्व का आयोजन हुआ। इस अवसर पर उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं एवं कर्मचारी गण को सम्बोधित करते हुए मुनि मणिलाल जी ने कहा- भारतीय संस्कृति में अध्यात्म का सर्वोपरि महत्त्व है।

क्षमापना के इस अवसर पर जिस किसी व्यक्ति के साथ कटुता पूर्ण व्यवहार हुआ हो उसके साथ सरल हृदय

से क्षमायाचना करें तथा दूसरों को क्षमा प्रदान करें। क्योंकि क्षमा के धरातल पर ही धर्म का बीज वटवृक्ष का आश्रय स्थल बन सकता है। मुनि चैतन्य कुमार 'अमन' ने कहा सांवत्सरिक एवं क्षमा का पर्व जैन परम्परा में ही मनाया जाता है। क्षमा का विनिमय व्यक्ति को हल्का बना देता है। भार मुक्त बनना आत्मा का विशेष सद्गुण है।

पर्व की महत्ता इसी में है कि जिसके साथ हमारा मन-मुटाव अर्थात् वैर विरोध की गांठ बन्धी है उसे खोलकर मैत्री भाव स्थापित करें क्योंकि गांठ में रस नहीं होता चाहे वह गन्ने की

हो अथवा मन की। अतः पर्व की सार्थकता है कि हम सरलता से इन गांठों को खोलने का प्रयास करें। मुनि धर्मेन्द्र कुमार जी ने घटना का उल्लेख करते हुए क्षमापर्व पर अपने उद्गार व्यक्त किए। मुनि गिरीश कुमार जी ने अपने विचार प्रस्तुत किए। आचार्य भिक्षु समाधि संस्थान से व्यवस्थापक महावीर सिंह ने विचार व्यक्त करते हुए सबसे खमत खामणा किए।

डॉ. बी.आर. शर्मा, अणुव्रत समिति सिरियारी से पत्रकार प्रकाश कुमार ने विचार प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संचालन स्वस्विक जैन ने किया।

मासखमण तप प्रत्याख्यान का आयोजन

अमराईवाड़ी ओढव।

जैन धर्म में तप को मंगल कहा गया है। तपस्या के द्वारा शरीर, मन, बुद्धि, आत्मा को मंगलमय बनाया जा सकता है। इंद्रियों का संयम तप की चाबी है। साहसी व्यक्ति ही तप का दीप जला सकता है।

तपस्या कर्म निर्जरा का बहुत बड़ा साधन है। उपरोक्त उद्गार साध्वी

काव्यलताजी ने 17 वर्षीय कन्या हितांशी के 32 की तपस्या के उपलक्ष में कहे।

साध्वी श्री ने आगे कहा कि तपस्या कर हितांशी ने जिन शासन का मान बढ़ाया है, कुल पर कलश चढ़ाया है। साध्वी वृंद ने 'तपरी चुनरी ओढ़ हितांशी आई है' सुमधुर गीत से जनता को भाव विभोर कर दिया। साध्वी मधुस्मिताजी द्वारा प्रदत्त शुभकामना पत्रक का वाचन

साध्वी सुरभिप्रभाजी ने किया। साध्वी राहतप्रभा जी ने अपनी संसारपक्षीय छोटी बहन हितांशी को ढेर सारी बधाई दी। सुनीता ध्रुव नाहर ने भी 8 की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। टीपीएफ के सदस्यों ने मधुर गीत से मंगलाचरण प्रस्तुत किया। परिवार की ओर से रेशम लालवानी ने अपने उद्गार व्यक्त किए। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी ज्योतिषशा जी ने किया।



संयम से आत्मा को भावित करने का पर्व है पर्युषण

श्रीडूंगरगढ़

सेवा केंद्र व्यवस्थापिका 'शासनश्री' साध्वी कुंथुश्रीजी ने पर्युषण महापर्व के प्रथम दिन उपस्थित श्रावक-श्राविका समाज को प्रेरणा देते हुए कहा कि मनुष्य को जीने के लिए खाना चाहिए न की खाने के लिए जीना चाहिए। खान-पान पर संयम अति आवश्यक है, स्वास्थ्य की दृष्टि से भी और आध्यात्मिक दृष्टि से भी। साध्वी सुमंगलाश्रीजी, साध्वी जीतयशा जी, साध्वी ललिताश्री जी और साध्वी सरसप्रभा जी ने खाद्य संयम दिवस पर भावपूर्ण अभिव्यक्ति दी। श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा द्वारा जैन विद्या कार्यशाला के बैनर का अनावरण कर पिछले वर्ष की परीक्षाओं के प्रमाण पत्र भी वितरित किए गए।

स्वाध्याय दिवस पर साध्वीश्री ने कहा कि पर्वाधिराज पर्युषण आत्मावलोकन का पर्व है, आत्मा के विषय में अनुप्रेक्षा, चिंतन-मनन करना स्वाध्याय है। स्वाध्याय करने से ज्ञान का विकास होता है, नए-नए रत्न प्राप्त होते हैं। स्वाध्याय से जहां ज्ञानावरणीय कर्म क्षीण होते हैं वही मानसिक संबल प्राप्त होता है। स्वाध्याय से हमारा दृष्टिकोण सकारात्मक होता है और भावों में पवित्रता आती है। अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद श्रीडूंगरगढ़ द्वारा अभिनव सामायिक का आयोजन किया गया। तेयुप अध्यक्ष मनीष नौलखा, पूर्व अध्यक्ष प्रदीप पुगलिया, सह मंत्री विवेक भंसाली ने विजय गीत द्वारा मंगलाचरण किया।

साध्वी श्री ने कहा- भगवान महावीर ने बताया सामायिक का अर्थ है समता की साधना, आत्मा में रहना और अपनी आत्मा में स्थिर होने का अभ्यास करना। सुख-दुःख में, लाभ-हानि में, जीवन-मरण में, निंदा-प्रशंसा में, अनुकूल-विषम परिस्थितियों में, सम भाव से रहना, यही समता भाव सामायिक है। साध्वीश्री ने अत्यंत रोचक रूप से भगवान महावीर के जीवन वृत्त के अंतर्गत मरीचि के भव को बताते हुए अहंकार के स्वरूप को व्याख्यायित किया।

साध्वी सुमंगलाश्री जी ने उत्तराध्ययन सूत्र का वाचन किया और अभिनव सामायिक का सुंदर प्रयोग त्रिपदी वंदना, जप, स्वाध्याय आदि से करवाया। साध्वी ऋजुप्रज्ञा जी और साध्वी सम्यक्त्वप्रभा जी ने सामायिक दिवस पर अपने सारगर्भित

विचार प्रस्तुत किये।

वाणी संयम की महत्ता बताते हुए साध्वी श्री ने कहा कि मौन सोना और बोलना चांदी है। मौन से ऊर्जा का संचार होता है। हर समय मौन करना संभव नहीं है, बोलना भी आवश्यक है। कब बोलें, कैसे बोलें, कितना बोलें इन सब का प्रशिक्षण अवश्य लें।

साध्वीश्री ने भगवान महावीर का पूर्व भवों का चित्रण किया। साध्वी सरसप्रभा जी ने 'मधुर भाषी बनना होगा' गीत का सुमधुर संगान किया। साध्वी ललितरेखा जी और साध्वी सुमंगलाश्री जी ने वाणी संयम दिवस पर अपने सारगर्भित विचार रखे।

अणुव्रत चेतना दिवस कार्यक्रम की शुरुआत अणुव्रत गीत के संगान से साध्वी सम्यक्त्वप्रभा जी ने की। साध्वी सुमंगलाश्री जी ने आगम वाणी के वाचन से जन-जन को आप्लावित किया और भगवान ऋषभ देव के पूर्व भव पर प्रकाश डाला। साध्वी कुंथुश्रीजी ने बताया कि छोटे-छोटे नियमों से व्यक्ति संयम के पथ पर अग्रसर हो सकता है। इस अवसर पर साध्वी श्री जी ने उपस्थित जनमानस को अणुव्रत संकल्प स्वीकार करने की प्रेरणा दी।

जप दिवस पर साध्वी श्री ने कहा कि जप साधना मार्ग का एक सोपान है। जप से ज्ञान, दर्शन व चरित्र की प्राप्ति होती है। साध्वी श्री ने कहा कि तन्मयता, एकाग्रता, विधि सहित जप करने से ऊर्जा प्राप्त होती है और मनोवांछित कार्य भी सिद्ध हो जाते हैं। इस अवसर पर साध्वी श्री ने भगवान पार्श्वनाथ के जीवन वृत्त को रोचक रूप से प्रस्तुत किया। साध्वी दीपयशाजी ने जप दिवस की महत्ता बताते हुए सुमधुर गीत प्रस्तुत किया। साध्वी पुनीतप्रभाजी ने अपने विचार रखे। साध्वी सुमंगलाश्री जी ने भगवान पार्श्वनाथ के पूर्व भवों का विस्तार से विवेचन किया।

ध्यान दिवस पर साध्वी कुंथुश्री जी ने कहा कि एक आलंबन पर चित्त को एकाग्र करना ध्यान है, आत्मा के द्वारा आत्मा को देखना ध्यान है। ध्यान के चार प्रकारों का विवेचन करते हुए साध्वी श्री जी ने कहा कि प्रथम दो ध्यान-आर्त व रौद्र ध्यान अप्रशस्त ध्यान हैं, धर्म व शुक्ल ध्यान प्रशस्त ध्यान हैं। प्रशस्त ध्यान से जीव सद्गति को प्राप्त करता है और अप्रशस्त ध्यान से दुर्गति प्राप्त होती है। ध्यान की एकाग्रता के लिए श्वास का आलंबन लिया जा सकता है। जिसकी श्वास प्रेक्षा सध जाती है

उसका मन एकाग्र हो जाता है। प्रतिदिन ध्यान के प्रयोग की प्रेरणा के पश्चात पंचम आरे का विवेचन करते हुए साध्वीश्री ने भगवान महावीर के 19वें भव से 25वें भव तक की यात्रा करवाई। साध्वी सुमंगलाश्री जी ने उत्तराध्ययन सूत्र का वाचन कर आचार्य महाप्रज्ञ जी द्वारा रचित गीत 'आत्म साक्षात्कार प्रेक्षा ध्यान के द्वारा' का संगान किया। साध्वी सुलेखाश्री जी ने ध्यान दिवस की महत्ता पर अपने सारगर्भित विचार रखे।

संवत्सरी महापर्व के दिन साध्वी श्री ने कहा कि आज का दिन शलाका का दिन है, जैन इतिहास के अनुसार यह अहिंसा की प्रतिष्ठा का दिन है। यह अध्यात्म का शिरोमणि पर्व है, मैत्री की पावन गंगा का अवतरण है। यह पर्व मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा, साधना, धर्म आराधना, कषाय पर विजय का पर्व है। इस पर्व को मनाने की यही सार्थकता है कि हम सबके प्रति मैत्री का भाव रखें। साध्वी श्री ने आज के दिन को पूर्ण रूप से लौकिक कार्यों से निवृत्त होकर आध्यात्मिकता से मनाने की प्रेरणा दी। प्रवचन कार्यक्रम में भगवान महावीर के जन्म से लेकर दीक्षा और निर्वाण तक के जीवन चरित्र का वाचन किया गया।

क्षमापना दिवस- क्षमा याचना दिवस पर क्षमा रुपी अमृत से सिंचित धर्म परिषद को संबोधित करते हुए साध्वी श्री ने अपने उद्बोधन में कहा- क्षमा वीरों का आभूषण है। कायर व्यक्ति क्षमा की गरिमा से मंडित नहीं हो सकता। क्षमा वही कर सकता है जिसका हृदय विशाल हो, जिसमें सहजता हो, सरलता हो। साध्वी श्री ने सभी को प्रेरित करते हुए कहा - जिसके प्रति यत्किंचत मन में तनाव, मनमुटाव हो, उससे अंतःकरण से क्षमा याचना करें, क्षमा के आदान-प्रदान से मैत्री पर्व में हल्के, ऋजु बनें और कषायों का अल्पीकरण करें। साध्वीश्री ने सर्वप्रथम श्रद्धास्पद आचार्य प्रवर, श्रद्धेया साध्वी प्रमुखा श्री जी सहित पूरे धर्मसंघ से खमत खामणा किया।

तत्पश्चात सभी संस्थाओं के पदाधिकारियों, समस्त श्रावक समाज से हार्दिक से खमत खामणा किया। श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के मंत्री प्रदीप पुगलिया ने सभी संस्थाओं के पदाधिकारी, सदस्यगणों, संपूर्ण श्रावक समाज, उपस्थित भाइयों-बहनों, संस्था के कर्मचारियों एवं संस्था को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग करने

वाले सभी से बारंबार क्षमा याचना की। तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष मनीष नौलखा, महिला मंडल की मंत्री संगीता बोथरा ने भी उपस्थित महानुभावों से हार्दिक क्षमा याचना की एवं अपने विचार अभिव्यक्त किये।

जयपुर

जैन साधना पद्धति में पर्युषण को आत्मचिंतन, आत्ममंथन और आत्मावलोकन का महापर्व माना गया है। जो व्यक्ति अपनी आत्मा के आसपास रहता है, त्याग तपस्या का संकल्प लेता है, स्वाध्याय, ध्यान, मौन, खाद्य संयम, सामायिक, जप आदि का प्रयोग करता है वह व्यक्ति आत्मा से परमात्मा, जन से जिन की दिशा में प्रस्थान करता है। यह उद्गार अणुविभा केंद्र में संवत्सरी महापर्व के अवसर पर आचार्यश्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी मंगलप्रभा जी ने धर्मसभा में व्यक्त किए। पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व के अंतर्गत 'जैन धर्म का सिंहावलोकन - संवत्सरी महापर्व' की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए साध्वीश्री ने कहा - जीवन को उजालों से भरने का दिन है, आय-व्यय का लेखा-जोखा करने का दिन है।

संवत्सरी महापर्व कहता है बाहर से भीतर की यात्रा करें। यह महान बनने का आह्वान करता है। यह पर्व ऋजुता और मृदुता का पर्व है। वर्ष भर में हुई भूलों, त्रुटियों को सुधारने तथा दूसरे के प्रति किए गए कठोर व्यवहार के लिए क्षमा के द्वारा मैत्री की धारा बहाने का समय है। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र, चौबीसी के संगान से हुआ। अध्यात्म के महासूर्य भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा का वर्णन करते हुए साध्वीश्री ने कहा कि भगवान महावीर अध्यात्म जगत के महासूर्य थे। उनके तेजस्वी आभावलय ने सारे विश्व को अभिनव दिशा प्रदान की। वे त्यागवीर, तपोवीर, धर्मवीर और कर्मवीर थे।

साध्वी श्री द्वारा भगवान महावीर के जन्म से पूर्व माता को आए 14 स्वप्न, महावीर के द्वारा गर्भ में की गई प्रतिज्ञा, चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को भगवान महावीर का जन्म, जन्मोत्सव, दीक्षा महोत्सव आदि का रोचक वर्णन किया गया। इस प्रकार भगवान महावीर के 27 भव, चंदनबाला का व्याख्यान, संपूर्ण जैन संस्कृति, तीर्थंकर महावीर के पश्चात उत्तरवर्ती प्रभावक आचार्यों की स्वस्थ

परंपरा तथा तेरापंथ धर्मसंघ के यशस्वी आचार्यों का जीवन चरित्र आदि जैन शास्त्रों एवं जैन इतिहास और परंपरा का वाचन साध्वी मंगलप्रभाजी, साध्वी सुमनकुमारी जी, साध्वी समप्रभाजी एवं साध्वी प्रणवप्रभा जी ने किया। साध्वी वृंद ने 'आयो जैन जगत रो प्रमुख पर्व संवत्सरी रे' सुमधुर गीत का संगान किया। साध्वी समप्रभा जी ने तपस्या का विवरण प्रस्तुत किया। प्रतीक लोढ़ा ने पर्युषण के भावों से ओत-प्रोत गीत का सुमधुर संगान किया। राजकुमार बरड़िया एवं पन्नालाल पुगलिया ने अपने सारगर्भित विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर श्रावक-श्राविकाओं द्वारा बड़ी संख्या में चौविहार उपवास, अष्ट प्रहरी, छः प्रहरी, चार प्रहरी पौषध किए गए। नमस्कार महामंत्र का अखंड जप सुचारू रूप से चला।

क्षमापना दिवस - साध्वीश्री के सान्निध्य में 'पवित्रता का प्रसाद - क्षमापना पर्व' के अवसर पर सामूहिक 'खमत खामणा' का कार्यक्रम आयोजित हुआ। नमस्कार महामंत्र से शुरू हुए कार्यक्रम में साध्वीश्री जी ने दिल की गांठें खोलकर एकदम हल्का और पवित्र होने की प्रेरणा देते हुए गुरुदेव आचार्यश्री महाश्रमण जी, साध्वी प्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी सहित चतुर्विध धर्म संघ से खमत खामणा की।

इस अवसर पर साध्वीश्री ने बताया - पर्युषण महापर्व का प्राण है क्षमापना। संवत्सरी पर सारे जीवों से क्षमापना करनी है।

वास्तविक आराधना तभी होगी जब हमारे दिल में किसी के प्रति मनमुटाव नहीं रहेगा, क्लेश नहीं होगा, मन में वैर नहीं होगा। जब तक मन में किसी व्यक्ति के प्रति वैर की गांठ है, किसी के प्रति मन में द्वेष है, तब तक हमारा मोक्ष नहीं होगा। सच्चा धर्म तभी प्रकट होता है जब हृदय में क्षमापना का भाव प्रकट होता है। हमें उदार बनना है, क्षमाशील बनना है, सहनशील बनना है। क्षमा हमारा धर्म है।

उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं ने आत्मालोचन और आत्म निरीक्षण कर चौरासी लाख जीव योनी से क्षमा याचना करते हुए समस्त साध्वी वृंद से एवं एक-दूसरे से शुद्ध अंतःकरण से क्षमा याचना की।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद, अणुविभा केंद्र के पदाधिकारियों ने सभी से क्षमा याचना की।



संयम से आत्मा को भावित करने का पर्व है पर्युषण

कांदीवली, मुंबई

तेरापंथ भवन, कांदीवली, मुंबई में पर्युषण पर्वाराधना का आयोजन साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में किया गया।

खाद्य संयम दिवस- साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा जी ने कहा- हर सम्प्रदाय भाद्रव माह में उत्सव मनाता है। इस माह में अध्यात्म के विकिरण स्वतः स्फूर्त होते हैं। हम उन महापुरुषों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने इस पर्युषण महापर्व को आठ दिन मनाने का सुचिन्तन किया। साध्वी श्री ने कहा- प्रदर्शन से आत्मदर्शन की दिशा में प्रस्थान पर्युषण है। पर्युषण का अर्थ है, चारों दिशाओं से हटकर आत्मा में निवास करना। आवश्यकता है पर्युषण में निर्धारित अष्टदिवसीय साधना कर हम आत्मा को पुष्ट बनाएं। इस अवसर पर चतुर्दशी हाजरी वाचन करते हुए साध्वीश्री ने कहा- तेरापंथ का हर साधु-साध्वी अनुशासन और मर्यादा का सम्मान करते हैं। श्रावक समाज को भी यह चिन्तन करना चाहिए- हमारा सम्यक्त्व सुरक्षित रहे, लौकिक और लोकोत्तर धर्म स्वस्थ रहे। आहार संयम के संदर्भ में साध्वीश्री जी ने जैन जीवन शैली अपनाने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम की शुरुआत महिला मंडल कांदीवली के मंगल संगान से हुई। साध्वीवृन्द ने सामूहिक संगान किया। साध्वीवृन्द द्वारा- 'पर्युषण आया गाइड के साथ' की रोचक प्रस्तुति दी गई। साध्वी चैतन्यप्रभा जी ने नए अंदाज में आहार संयम के टिप्स बताए। श्री तुलसी महाप्रज्ञा फाउण्डेशन अध्यक्ष मेघराज धाकड़ ने स्वागत संभाषण किया, मंत्री प्यारचंद मेहता ने आभार जताया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी राजुलप्रभा जी ने किया।

स्वाध्याय दिवस- साध्वीश्री ने कहा- स्वाध्याय व्यक्ति को आत्महित की प्रेरणा देता है। आगम साहित्य में ध्यान के साथ स्वाध्याय करने की प्रेरणा दी गई है। सद्ग्रन्थों के स्वाध्याय से कठिन समस्याओं को सुलझाया जा सकता है। श्रावक समाज को जैन दर्शन, तत्त्वदर्शन, आगम दर्शन और तेरापंथ दर्शन आदि का स्वाध्याय करना चाहिए।

साध्वी राजुलप्रभाजी और साध्वी चैतन्यप्रभा जी ने भगवान महावीर और पर्युषण साक्षात्कार की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का प्रारंभ मलाड महिला मंडल के संगान से हुआ। साध्वी वृन्द ने गीत का संगान किया। साध्वी अतुल्यशा

जी ने 'स्वाध्याय की प्रेरणा - होती रहे जागरण' विषय पर विचाराभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन साध्वी सुदर्शनप्रभा जी ने किया।

सामायिक दिवस- तेरापंथ युवक परिषद कांदीवली और मलाड द्वारा अभिनव सामायिक का आयोजन किया गया। साध्वीश्री ने कहा- समता का स्वीकरण और ममत्व का त्याग सामायिक है। सामायिक साधना से छह काय के जीव निर्भय बन जाते हैं। कार्यक्रम की शुरुआत तेयुप कांदीवली के 'बलिदानी संघ हमारा' गीत से हुई। साध्वी शौर्यप्रभा जी ने अपनी भावना व्यक्त की। साध्वी वृन्द द्वारा- 'समता की अनुपम साधना' गीत का संगान किया गया। साध्वी डॉ. मंगल प्रज्ञा जी द्वारा - भगवान महावीर के जीवन दर्शन पर नयसार का भव प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी अतुल्यशा जी ने किया।

वाणी संयम दिवस- साध्वीश्री ने कहा- आज चिंतन करने का दिन है - When to speak? Where to speak? Why speak? How to speak? What to speak? जीवन व्यवहार में इन प्रश्नों का आलम्बन लें। भगवान महावीर ने भाषा विवेक पर बल दिया। अनावश्यक और ऊँची आवाज में नहीं बोलना चाहिए। घर-परिवार में अधिकतर समस्याएं वाणी के अविवेक से आती हैं। कहा जाता है पानी मर्यादा तोड़ता है, तब विनाश होता है और वाणी मर्यादा हीन हो तो महाविनाश होता है। साध्वी सुदर्शनप्रभा जी ने कहा- वाणी एक आभूषण है इसकी सुरक्षा और समीक्षा अपेक्षित है। मलाड युवक परिषद द्वारा मंगल संगान किया गया। साध्वी वृन्द द्वारा 'पत्थर भी बन जाता है' प्रस्तुति से वाणी संयम की महत्ता बताई। कार्यक्रम का संयोजन साध्वी चैतन्यप्रभा जी ने किया।

अणुव्रत चेतना दिवस- साध्वी श्री ने कहा, तेरापंथ के विस्तार में आचार्य श्री तुलसी का महायोगदान है - अणुव्रत। जैन समाज के चिंतन का विषय, जागरण का समय है। सामाजिक कुरीतियों को हराने का अपने घर से प्रयास करें। अणुव्रत के नियम जीवन पथ को रोशनी से भरने वाले हैं। तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद गोरेगांव ने 'जय जय भिक्षुशासन' गीत का सह संगान किया। साध्वी वृन्द ने "सम्यक्त्व एयरलाइन्स" की शानदार प्रस्तुति दी। मीनाक्षी भुतोडिया ने

मधुर संगान किया। अणुव्रत डिजिटल डिटोक्स संयोजक दलपत बाबेल ने कहा- आज की जरूरत है डिजिटल डिटोक्स से जीवन शैली बदले। सह संयोजक चिराग पामेचा ने भी अपनी बात रखी। संचालन साध्वी शौर्यप्रभा जी ने किया।

जप दिवस- साध्वीश्री ने कहा- मंत्र विद्या समस्याओं का सटीक समाधान है। शक्ति प्राप्ति का अमोघ उपाय है। हम सौभाग्यशाली हैं जिन्हें आध्यात्मिक साधना हेतु मंत्रों का वैभव प्राप्त है। मंत्र में शब्द, भावना और प्रकम्पन मिलते हैं तो वे शक्ति शाली बन जाते हैं। साध्वी श्री ने कहा जप करने की सही विधि का ज्ञान अपेक्षित है। करमाला, मणिमाला, वर्णमाला से आवर्त, ओम, शंखावर्त, नन्दावर्त की विशेष साधना की जाती है। साध्वीवृन्द ने 'आओ करे सिद्धालय की सैर' की मोहक प्रस्तुति दी। आसीन्द से समागत अभिनव चोरडिया ने मंगल संगान किया। दहिसर महिला मंडल ने मंगलाचरण की प्रस्तुति दी। साध्वी शौर्यप्रभा जी ने विचार व्यक्त किए। साध्वी वृन्द ने 'जप से मिलती है शांति' सामूहिक संगान किया। मंच संचालन साध्वी सुदर्शनप्रभा जी ने किया।

ध्यान दिवस- साध्वी श्री ने कहा कि भगवान महावीर ने साढ़े बारह वर्ष ध्यान साधना की। जैन परम्परा में ध्यान का प्रमुख स्थान रहा है। प्रायः विलुप्त ध्यान पद्धति को आचार्य तुलसी और प्रेक्षा प्रणेता आचार्य महाप्रज्ञ जी ने पुनर्जीवित किया। देश-विदेश की यात्राओं के अनुभवों को साझा करते हुए साध्वी जी ने कहा - ध्यान साधना से अनेक चेतनाओं ने आनन्द, शक्ति और शांति की प्राप्ति की है। श्रावक समाज प्रेक्षाध्यान को जीवन के साथ जोड़े। बोरिवली ज्ञानशाला, कन्या मंडल, युवक परिषद, महिला मंडल ने भावपूर्ण गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी शौर्यप्रभा जी ने किया।

संवत्सरी महापर्व- साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा जी ने कहा- संवत्सरी जैन परम्परा का सिरमौर पर्व है। आज क्षमा का मार्ग बताने वाले ऐसे महापर्व की जरूरत है। इस पर्व के आलोक में साधक अपनी अन्तरात्मा का अवलोकन कर पवित्रता के पथ पर बढ़ने का संकल्प करता है। मीनाक्षी भूतोडिया और रविन्द्र मालू ने अपने गीतों से सबका मन मोहा। साध्वी राजुलप्रभा जी एवं साध्वी अतुल्यशा जी ने आगमिक, उत्तरवर्ती आचार्यों का

जीवन प्रस्तुत किया। साध्वी चैतन्यप्रभा जी ने गणधर परम्परा, निन्हव परम्परा की यात्रा करवाई। साध्वी सुदर्शनप्रभा जी ने तेरापंथ की आचार्यों की जीवन झांकी प्रस्तुत की। साध्वी शौर्यप्रभा जी ने तेरापंथ की साध्वी प्रमुखाओं का जीवन दर्शन प्रस्तुत किया। साध्वीवृन्द द्वारा श्रद्धेय आचार्य महाप्रज्ञ जी द्वारा रचित - 'आत्मा की पोथी पढ़ने का' गीत का संगान किया गया।

क्षमायाचना- साध्वी श्री ने कहा- आज अतीत की कथा को समाप्त करें। फोरगेट और फोरगिव इन सूत्रों को याद करें। जिन्दगी की ऊबड़-खाबड़ राह पर फिसलना, गिरना स्वाभाविक है, गिर कर संभलना श्रेयस्कर है। साध्वी वृन्द ने मैत्री गीत का संगान किया। कांदीवली, मलाड, दहिसर, गोरेगांव, बोरिवली- तेरापंथ सभा, तेरापंथ महिला मंडल, युवक परिषद ने अपनी टीम के साथ साध्वी वृन्द से क्षमा याचना की। श्री तुलसी महाप्रज्ञा फाउण्डेशन अध्यक्ष मेघराज धाकड़ ने क्षमा स्वर प्रस्तुत किया और कांदीवली में प्रदत्त चातुर्मास हेतु गुरुदेव के प्रति आभार व्यक्त किया। मंत्री प्यारचंद मेहता ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संयोजन तेरापंथ सभा मुंबई के उपाध्यक्ष दलपत बाबेल ने किया। हजारों व्यक्तियों ने पौषध आराधना एवं जप-तप आराधना कर महापर्व को उत्साह के साथ मनाया।

चिकमंगलूर

जैन धर्म का सर्वोच्च महान पर्व संवत्सरी त्याग तप आराधना के भावों से भावित है। इस दिन साधक अपनी साधना को नया रूप देने को तत्पर रहता है। यह मन की पवित्रता और अतीत के प्रतिलेखन का महान दिन है। इस आध्यात्मिक पर्व पर व्यक्ति आत्मकेन्द्रित हो अतीत की भूलों का सिंहावलोकन करता है। इस पर्व में आबाल वृद्ध सहर्ष अपनी आत्मा को शुद्ध विचारों और भावों से सराबोर करता है। ये विचार मुनि मोहजीतकुमार जी ने तेरापंथ भवन के भिक्षु सभागार में पर्युषण पर्व आराधकों के मध्य कही। संवत्सरी महापर्व का शुभारम्भ नमस्कार महामंत्र के सस्वर संगान से हुआ। मुनि भव्यकुमार जी ने चित्त सम्भूति के रोमांचक सफर को पूर्णाहुति दी। मुनि जयेशकुमार जी ने संवत्सरी को शाब्दिक परिभाषा देते हुए कहा कि वत्सर का अर्थ है वर्ष और सम्पूर्ण वर्ष को एक दिन में समेटने का नाम है

संवत्सरी। व्यक्ति सोचता है एक दिन सारा धर्म ध्यान करके पूरे साल की भरपाई कर लूं। पर जीवन के हर क्रम में निरंतरता आवश्यक होती है। इस दिन हम आत्मचिंतन कर यह सोचें कि अब तक मैंने क्या हासिल किया और अभी क्या करना शेष है? फिर संकल्पित हो शेष को अशेष बनाने की दिशा में कदम बढ़ा दें। मुनि मोहजीतकुमारजी ने भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा के परिप्रेक्ष्य में जन्म, साधना परिषदों के वर्णन के साथ उत्तरवर्ती आचार्य जम्बूस्वामी की गेय कथा को प्रस्तुत कर संयम की भावना को जागृत किया।

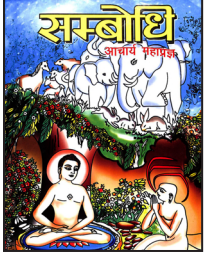
मुनि भव्यकुमारजी ने आगम युग, उत्कर्ष युग और नवीन युग के आचार्यों के जीवन प्रसंगों को प्रकट किया। मुनि जयेशकुमारजी ने सांवत्सरिक प्रवचन क्रम का उपसंहार करते हुए तेरापंथ के 11 आचार्यों का संक्षिप्त जीवन वृत्त प्रस्तुत किया। इस अवसर पर हजारों उपवास के साथ सैकड़ों पौषध और अनेकों तपस्याएं हुईं।

पंचकुला, हरियाणा

पर्युषण पर्व पर आचार्य श्री महाश्रमण जी के निर्देशानुसार पंचकुला में प्रवक्ता उपासक पारसमल दूगड़ (मुंबई) एवं सहयोगी उपासक रमेश कुमार सिंघवी (मुंबई) की उपस्थिति में कर्म निर्जरा के इस पावन पर्व पर प्रत्येक दिवस का आयोजन सुव्यवस्थित रूप से किया गया। प्रातः कालीन प्रवचन में आगम वाणी, कालचक्र, तीर्थंकर चारित्र, भगवान ऋषभ, भगवान पार्श्वनाथ एवं भगवान महावीर के जन्म से लेकर निर्वाण तक प्रस्तुति दी। रात्रि कालीन कार्यक्रम में राग-द्वेष, क्रोध, मान, माया, लोभ से परिवारों को बचने की राह दिखाई एवं तत्त्वों को सरल कहानियों के माध्यम से समझाने का प्रयास किया। सहयोगी उपासक रमेश कुमार सिंघवी ने पर्युषण दिवसों के निर्धारित विषयों, संवत्सरी महापर्व और क्षमापना दिवस के बारे में अपने विचार व्यक्त किए। सात दिनों में प्रेक्षाध्यान, आसन, प्राणायाम, अद्भुत मुद्राओं एवं ध्यान के प्रयोग भी करवाए गए। संवत्सरी महापर्व पर कुल 52 पौषध हुए। सातों दिन निरंतर जाप, एकासन, उपवास और आयम्बिल भी हुए। तेरापंथी सभा, महिला मंडल, युवक परिषद आदि सभी संस्थाओं ने बड़े उत्साह व उमंग से कार्य किया एवं पूरे समाज की सराहनीय सहभागिता रही।



संबोधि

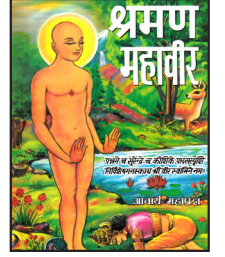


गृहस्थ-धर्म प्रबोधन



-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

श्रमण महावीर



प्रगति के संकेत

श्रमण-भूत

यह ग्यारहवीं प्रतिमा है। इसका कालमान ग्यारह महीनों का है। इसमें पूर्वोक्त उपलब्धियों के अतिरिक्त प्रतिमाधारी उपासक सिर को क्षुर से मुंडवा लेता है या लुंचन करता है। वह साधु का वेश धारण कर ईर्यासमिति आदि साधु-कर्मों का अनुपालन करता हुआ विचरण करता है। वह भिक्षा के लिए गृहस्थों के घरों में प्रवेश कर 'प्रतिमा सम्पन्न श्रमणोपासक को भिक्षा दो' ऐसा कहता है। यदि कोई उससे पूछे कि 'तुम कौन हो?' तो वह यह कहता है-'मैं प्रतिमा सम्पन्न श्रमणोपासक हूँ।'

प्रायः वे लोग इनका स्वीकरण करते हैं :

१. जो अपने आपको श्रमण बनने के योग्य नहीं पाते किन्तु जीवन के अंतिम काल में श्रमण-जैसा जीवन बिताने के इच्छुक होते हैं।

२. जो श्रमण जीवन बिताने का पूर्वाभ्यास करते हैं।

साधक गृहस्थ जैसे-जैसे अपने साधना अभ्यास में सफल, प्रसन्न और आनंदित हो जाता है वैसे-वैसे ममत्व, आसक्ति और भ्रांति के क्षीण होने पर सत्य की दिशा में तीव्रगति से बढ़ने को आतुर हो जाता है। साध्य-धर्म के अतिरिक्त फिर उसका मन अन्यत्र रमण नहीं करता। वह चलता है-मंजिल, लक्ष्य को प्राप्त करना। इस दृष्टि से जो कुछ बाह्य रूप में स्वीकृत किया था अब उसे प्रत्यक्ष अनुभूति के रूप में देखना चाहता है। अनुभूति समय सापेक्ष है। प्रतिमाओं के अभ्यास-काल में बाह्य क्रियाओं से निवृत्त होकर वह सत्य की आराधना में जीवन समर्पित करता है और सारा समय साधना की प्रक्रियाओं में योजित करता है। सफलता समय, श्रद्धा, धैर्य और निरंतरता पर आधारित है।

आनंद श्रावक भगवान् का प्रमुख उपासक था। उसने चौदह वर्षों तक बारहव्रती का जीवन बिताया। पन्द्रहवें वर्ष के अंतराल में एक दिन उसके मन में धर्म-चिंता उत्पन्न हुई और वह आत्मा या सत्य की खोज तथा उसके लिए समर्पित जीवन बिताने के लिए कृतसंकल्प हुआ। दूसरे दिन अपने ज्येष्ठपुत्र को घर का भार सौंपकर भगवान् महावीर के पास उपासक की ग्यारह प्रतिमाएं स्वीकार कर लीं। इनके प्रतिपूर्ण पालन में साढ़े पांच वर्ष लगे। तत्पश्चात् उसने अपश्चिम-मारणांतिक संलेखना की और अंत में एक मास का अनशन किया।

उपासक आनंद के इस वर्णन से यही फलित होता है कि उपासक की ग्यारह प्रतिमाओं का स्वीकरण जीवन के अंतिम भाग में किया जाता था। उसकी पूर्व-भूमिका के रूप में वर्षों तक बारह व्रतों का पालन करना होता था और ये प्रतिमाएं भावी अनशन के लिए भी पृष्ठभूमि बनाती थीं।

४३. असंयमं परित्यज्य, संयमस्तेन सेव्यताम्।

असंयमो महद् दुःखं, संयमः सुखमुत्तमम् ॥

इसलिए असंयम को छोड़कर संयम का सेवन करना चाहिए। असंयम महान् दुःख है। संयम उत्तम सुख है।

असंयम बहिर्मुखता है और संयम स्व-मुखता (अंतर्मुखता) है। स्वभाव संयम है और विभाव असंयम। आत्म-विस्मृति असंयम है और आत्मस्मृति संयम। दुःख विस्मृति है और सुख स्व-स्मृति। जिसे सुख प्रिय है उसे संयम प्रिय होना चाहिए। संयम का फल सुख है और असंयम का दुःख। संयम के सिवाय सुख की आकांक्षा करना मृग मरीचिका में पानी की तलाश करना है। बाहर से सुख नहीं मिला, किंतु सुखाभास अवश्य मिलता है। मनुष्य उसी सुखाभास में मुग्ध होकर पुनः पुनः दुःख, अशांति और कष्टों का अनुभव करता चला जा रहा है। इसीलिए महावीर कहते हैं अपने अंतश्चक्षुओं को उद्घाटित कर देखो, यहां क्या मिला है? यदि दुःख के सिवा कुछ नहीं मिला तो अब उसे छोड़कर सत्य के पथ का अनुसरण करो।

इति आचार्यमहाप्रज्ञविरचिते संबोधिप्रकरणे

गृहस्थधर्मप्रबोधननामा चतुर्दशोऽध्यायः ।

(क्रमशः)

भगवान् महावीर शूलपाणि यक्ष के मन्दिर में उपस्थित है।' समूचे अस्थिकग्राम में यह चर्चा हो रही है कि एक भिक्षु अपने गांव में आया है और वह शूलपाणि यक्ष के मन्दिर में ठहरा है। लोग परस्पर कहने लगे, यह अच्छा नहीं हुआ। बेचारा मारा जाएगा। क्या पुजारी ने उसे मनाही नहीं की? क्या किसी आदमी ने उसे बताया नहीं कि उस स्थान में रात को रहने का अर्थ मौत को बुलावा है। अब क्या हो, रात ढल चुकी है। 'इस समय यहां कौन जाए?' पुजारी और उसके साथियों ने लोगों को बताया कि हमने सारी स्थिति उसे समझा दी थी। वह कोई बहुत ही आग्रही भिक्षु है। हमारे समझाने पर भी उसने वहीं रहने का आग्रह किया। इसका हम क्या करें? यह बात उत्पल तक पहुंची। उसने सोचा, 'कोई साधारण व्यक्ति भयंकर स्थान में रात को ठहर नहीं सकता। स्थिति को जान लेने पर भी वहां ठहरा है तो अवश्य ही कोई महासरव व्यक्ति है।' विचार की गहराई में डुबकी लगाते-लगाते उसके मन में एक विकल्प उत्पन्न हुआ, 'मैंने सुना है कि भगवान् महावीर इसी वर्ष दीक्षित हुए हैं। वे बहुत ही पराक्रमी हैं। कहीं वे ही तो नहीं आए हैं?' काफी रात जाने तक लोग बातें करते रहे। वे सोए तब भी उनके दिल में करुणा जागृत थी। प्रातः काल लोग जल्दी उठे। उषा होते-होते वे मन्दिर में आ पहुंचे। कुछ लोग भगवान् को देखने का कुतूहल लिये आए और कुछ लोग अन्त्येष्टि-संस्कार सम्पन्न करने के लिए। वे सब मन्दिर के दरवाजे में घुसे। वे यह देख आश्चर्य में डूब गए कि भिक्षु अभी जीवित है। उन्हें अपनी आंखों पर भरोसा नहीं हुआ। वे कुछ और आगे बढ़े, फिर ध्यान से देखा। उन्हें अपनी धारणा से प्रतिकूल ही देखने को मिला कि भिक्षु अभी अच्छी तरह से जीवित है। वे हर्ष-विभोर हो आकाश में उछले। सबने उच्च स्वर से तीन बार कहा 'शान्तं पापं, शान्तं पापं, शान्तं पापं। भिक्षु ! तुम्हारी कृपा से हमारे गांव का उपद्रव मिट गया। भय समाप्त हो गया, अब यहां कोई भय नहीं रहा।'

उत्पल आगे आया। उसने भगवान् के शरीर को देखा, फिर रात की घटना को देखा। वह निमित्त-बल से सारी स्थिति जान गया। वह बोला, 'भन्ते! आज रात को आपने कुछ नींद ली है?'

'हां उत्पल।'

'उसमें आपने कुछ स्वप्न देखे हैं?'

'तुम सही हो।'

'भन्ते! आप बहुत बड़े ज्ञानी हैं। उनका फलादेश जानते ही हैं। फिर भी मैं अपनी उत्कंठा की पूर्ति के लिए कुछ कहना चाहता हूँ।'

उत्पल कुछ ध्यानस्थ हुआ। वह अपने मन को निमित्त-विद्या में एकाग्र कर बोला, 'भन्ते!'

१. ताल पिशाच को पराजित करने का स्वप्न मोह के क्षीण होने का सूचक है।

२. श्वेत पंख वाले पुंस्कोकिल का स्वप्न शुक्लध्यान के विकास का सूचक है।

३. विचित्र पंखवाले पुंस्कोकिल का स्वप्न अनेकांत दर्शन के प्रतिपादन का है।

४. भन्ते! चौथे स्वप्न का फल मैं नहीं समझ पा रहा हूँ।

५. श्वेत गौवर्ग का स्वप्न संघ की समृद्धि का सूचक है।

६. कुसुमित पद्म सरोवर का स्वप्न दिव्यशक्ति की उपस्थिति का सूचक है।

७. समुद्र तैरने का स्वप्न संसार-सिन्धु के पार पाने का सूचक है।

८. सूर्य का स्वप्न कैवल्य की प्राप्ति होने का सूचक है।

९. पर्वत को आंतों से वेष्टित करने का स्वप्न आपके द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों के व्यापक होने का सूचक है।

१०. मेरु पर्वत पर उपस्थिति का स्वप्न धर्म का उच्चतम प्रस्थापना करने सूचक है।

भगवान् ने कहा, 'उत्पल ! तुम्हारा निमित्तज्ञान बहुत विकसित है। तुमने जो स्वप्नार्थ बताए हैं, वे सही हैं। मेरा चौथा (रत्न की दो मालाओं का) स्वप्न साधु-धर्म और गृहस्थ-धर्म इस द्विविध धर्म की स्थापना सूचक है।'

(क्रमशः)



धर्म है उत्कृष्ट मंगल



धर्म है
उत्कृष्ट मंगल

आचार्य महाश्रमण

-आचार्यश्री महाश्रमण

बन्धन-मुक्ति
का प्रयोग



भोजन-पानी शरीर को बनाए रखने के लिए उपयोगी है। मुनि के लिए भोजन-पानी ग्रहण करना भी एक साधना है और उसका परिहार करना भी एक विशेष साधना है।

भाव-व्युत्सर्ग के तीन प्रकार बतलाए गए हैं-कषाय-व्युत्सर्ग, संसार-व्युत्सर्ग, कर्म-व्युत्सर्ग। कषाय व्युत्सर्ग के चार प्रकार हैं-क्रोध कषाय-व्युत्सर्ग, मान कषाय-व्युत्सर्ग, माया कषाय-व्युत्सर्ग और लोभ कषाय-व्युत्सर्ग।

कषाय की मुक्ति मोक्ष के लिए अनिवार्य है। उसका आसेवन साधना को किसी भी भूमिका में उपादेय हो सकता है क्या? क्षमा के द्वारा क्रोध का, मृदुता के द्वारा मान का, ऋजुता के द्वारा माया का और संतोष के द्वारा लोभ का विसर्जन कषाय-व्युत्सर्ग की साधना है।

कषाय (क्रोध आदि) और नोकषाय (वेद मोहनीय आदि) का कृशीकरण ही मुख्यतः साधना है।

संसार-व्युत्सर्ग के चार प्रकार हैं- नैरयिक-संसार-व्युत्सर्ग, तिर्यञ्च-संसार-व्युत्सर्ग, मनुष्य-संसार-व्युत्सर्ग, देव-संसार-व्युत्सर्ग।

साधक का लक्ष्य होता है आत्मा का साक्षात्कार और मोक्ष की प्राप्ति। उसके लिए संसार को छोड़ना होता है। कर्म-निर्जरा को ऋमिक प्रकृष्टता में संसार व्युत्सृष्ट होता जाता है। सबसे अन्त में मनुष्य-संसार व्युत्सृष्ट होता है। कर्म-व्युत्सर्ग के आठ प्रकार हैं ज्ञानावरणीय कर्म-व्युत्सर्ग, दर्शनावरणीय कर्म-व्युत्सर्ग, वेदनीय कर्म-व्युत्सर्ग, मोहनीय कर्म-व्युत्सर्ग, आयुष्य कर्म-व्युत्सर्ग, नामकर्म-व्युत्सर्ग, गोत्रकर्म-व्युत्सर्ग, अन्तराय कर्म-व्युत्सर्ग।

बारहवें गुणस्थान में मोहनीय कर्म सर्वथा-व्युत्सृष्ट हो जाता है। तेरहवें गुणस्थान में ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय और अन्तराय कर्म क्षीण हो जाते हैं। शेष चार अघात्य कर्म सिद्धावस्था के प्रथम समय में क्षीण होते हैं।

अहिंसा समयं चेव

एकादशांगी का दूसरा अंग है सूत्रकृतांग (सूयगडो)। उसमें एक श्लोक प्राप्त होता है-

एयं खु णाणिणो सारं, जं ण हिंसति कंचणं।

अहिंसा समयं चेव, एतावंतं विजाणिया।।

ज्ञानि होने का यही सार है कि वह किसी की हिंसा नहीं करता। समता अहिंसा है-इतना ही उसे जानना है।

'प्रश्न व्याकरण' सूत्र में अहिंसा को 'भगवती' विशेषण से अलंकृत कर कहा गया है-एसा सा भगवती अहिंसा, जा सा-

भीयाणं पिव सरणं, पक्खीणं पिव गयणं।

तिसियाणं पिव सलिलं, खुहियाणं पिव असणं।।

समुद्दमज्जे व पोतवहणं, चउप्पयाणं व आसमपयं।

दुहट्टिवयाण व ओसहिबलं, अडवीमज्जे व सत्यगमणं।।

यह वह भगवती अहिंसा है। वह प्राणियों के लिए वैसे ही आधारभूत है जैसे डरे हुए मनुष्यों के लिए शरण, पक्षियों के लिए गगन, प्यासों के लिए जल, भूखों के लिए भोजन, समुद्र में डूबते हुए मनुष्यों के लिए नौका, चतुष्पदों के लिए आश्रम, रोगियों के लिए औषध और जंगल को पार करने के लिए सार्थगमन (संघबद्ध यात्रा)।

अहिंसा धार्मिक जगत् का प्रमुख व बहुचर्चित शब्द है। इस एक शब्द की व्याख्या बहुत विस्तृत प्राप्त होती है। अहिंसा को समझने के लिए हिंसा को समझना भी अपेक्षित है। हिंसा के लिए आगम-साहित्य में 'पाणाइवाय' (प्राणातिपात) शब्द का प्रयोग मिलता है। अठारह क्रियाओं अथवा पापों में उसका प्रथम स्थान है। जीव का प्राणवियोजन करना हिंसा अथवा प्राणातिपात है। हिंसा संसार में सदा थी, है और सदा रहेगी यह एक शाश्वत तथ्य है। सर्वथा हिंसामुक्त स्थिति संसार में कभी हो नहीं सकती। संसार की बात तो दूर, शरीरधारी प्रवृत्तिमान् मनुष्य के लिए भी सम्पूर्णतया हिंसाविरत हो जाना प्रायः असम्भव है। अहिंसा महाव्रतधारी षष्ठगुणस्थानवर्ती साधु के लिए भी दीर्घकाल तक सर्वथा हिंसा से बचना दुःसम्भव अथवा प्रायः असम्भव है। उसके द्वारा भी किसी न किसी रूप में हिंसा दृष्टिगोचर बनती है। यह एक तथ्य है। नदीविहार, नौकाविहार, हरियाली आदि पर विसर्जन क्रिया, वर्षा के दौरान शौचार्थ गमन, विसर्जित मल आदि में जीवोत्पत्ति, पेट में कृमि आदि की उत्पत्ति- ऐसे प्रसंग हैं जिनमें प्राणातिपात (द्रव्य हिंसा) को अस्वीकार कैसे किया जा सकता है?

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री रायचन्दजी युग

मुनिश्री हरखचंदजी (अटाट्या) दीक्षा क्रमांक 144

मुनिश्री बड़े बुद्धिमान, मेधावी, विनयी, विवेकी, निष्ठाशील और प्रभावशाली साधु थे। मुनिश्री ने उपवास, बेले, तेले, चोले बहुत बार किये तथा 5/2, 6/1, 7/1, 8/1, 9/1, 13/1, 14/1, 15/1, 16/1 किये। अपने शीतकाल में शीत एवं उष्णकाल में गर्मी का परिषह बहुत सहन किया।

- साभार: शासन समुद्र -

संघीय समाचारों का मुखपत्र

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स



तेरापंथ टाइम्स

की प्रति पाने के लिए क्यूआर
कोड स्कैन करें या आवेदन करें

<https://abtyp.org/prakashan>

समाचार प्रकाशन हेतु ई-मेल करें

abtyp@gmail.com

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्



अभातेयुप के तत्वावधान में देशभर में हुआ समता की साधना 'अभिनव सामायिक' का प्रयोग

गाँधीनगर-दिल्ली

अभातेयुप द्वारा निर्देशित एवं तेयुप गाँधीनगर-दिल्ली द्वारा आयोजित अभिनव सामायिक कार्यक्रम तेरापंथ भवन, कृष्णानगर, दिल्ली में 'शासनश्री' साध्वी रविप्रभा जी ठाणा-5 के सान्निध्य में मनाया गया। साध्वीश्री के द्वारा नमस्कार महामंत्र के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। तेयुप गाँधीनगर-दिल्ली के संगायकों द्वारा मंगलाचरण की प्रस्तुति हुई। तेयुप अध्यक्ष अशोक सिंघी ने अभिनव सामायिक में पधारे हुए श्रावक-श्राविका समाज का स्वागत किया। 'शासनश्री' साध्वी रविप्रभा जी ने सामायिक की विस्तृत जानकारी श्रावक-श्राविका समाज को अवगत करवाई। अभिनव सामायिक का प्रयोग साध्वी पूर्णिमाश्रीजी ने करवाया। सामायिक साधक प्रभारी हितेश दुगड़ ने आभार ज्ञापित किया। मंच संचालन तेयुप गाँधीनगर-दिल्ली मंत्री प्रकाश सुराणा ने किया। इस अभिनव सामायिक में विभिन्न सभा संस्थाओं के पदाधिकारियों के साथ श्रावक-श्राविका समाज की अच्छी उपस्थिति रही। साध्वीश्री की विशेष प्रेरणा से कृष्णानगर क्षेत्र में कुल 580 सामायिक हुई।

हिरियुर

अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद, हिरियुर द्वारा 'अभिनव सामायिक' का आयोजन साध्वी पावनप्रभाजी के सान्निध्य में स्थानीय तेरापंथ भवन में किया गया। साध्वी पावनप्रभाजी ने अभिनव सामायिक का प्रयोग करवाते हुए कहा कि सामायिक में व्यक्ति 48 मिनट के लिए सारे सांसारिक कार्यों का त्याग कर अध्यात्म साधना में लीन हो जाता है। सामायिक में जप, ध्यान के साथ सद्साहित्य का स्वाध्याय भी किया जा सकता है। साध्वी वृन्द द्वारा सामायिक पर सारगर्भित गीतिका की प्रस्तुति दी गयी। साध्वी रम्यप्रभाजी ने त्रिपदी वन्दना एवं ध्यान के साथ अभिनव सामायिक का विधिवत प्रयोग करवाया। साध्वी उन्नतयशाजी ने सामायिक पर प्रेरणा देते हुए कहा भारत की अध्यात्म परंपरा में सभी धर्मों का सार है संतुलित जीवन-शैली। यह समता से प्राप्त होती है उसका प्रयोगात्मक अनुष्ठान है सामायिक। सामायिक में व्यक्ति 48 मिनट के लिए सांसारिक सभी कार्यों से उपहत होकर स्वाध्याय, जप एवं ध्यान साधना से

शुभ भावों में रमण करता है। सामायिक में श्रावक सीमित समय के लिए साधुता का उदाहरण बन जाता है। इस अवसर पर सभा अध्यक्ष जयंतिलाल चौपड़ा, तेयुप अध्यक्ष रिषभ बोकड़िया, महिला मण्डल अध्यक्ष शिल्पा बोकड़िया सहित सभा, तेयुप, महिला मंडल, कन्या मण्डल, ज्ञानशाला सदस्यों की सराहनीय उपस्थिति रही।

विक्रौली, मुंबई

पर्युषण पर्व के अवसर पर तेरापंथ युवक परिषद-विक्रौली द्वारा अभिनव सामायिक कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें 61 सदस्यों की उपस्थिति रही। नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। तेयुप अध्यक्ष मनीष बोहरा ने सभी सदस्यों का स्वागत किया। तेयुप टीम ने सामायिक गीतिका से मंगलाचरण की प्रस्तुति दी। उपासिका मीना जैन ने अभिनव सामायिक का सरल भाषा में विस्तृत विवरण दिया। सामूहिक रूप से त्रिपदी वंदना कर नमस्कार महामंत्र का उच्चारण करते हुए सामायिक का प्रत्याख्यान किया। जप, ध्यान स्वाध्याय व त्रिगुप्ति साधना का प्रयोग किया गया। तेयुप निवर्तमान अध्यक्ष संजय गुंटेचा ने आभार व्यक्त किया। सभा निवर्तमान अध्यक्ष प्रकाश पोखरना ने कुशल संचालन किया।

साउथ हावड़ा

मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में अभिनव सामायिक कार्यक्रम का आयोजन प्रेक्षा विहार में तेरापंथ युवक परिषद् साउथ हावड़ा द्वारा किया गया। जिसमें उत्तर हावड़ा, कलकत्ता मेन, दक्षिण कलकत्ता, पूर्वांचल, उत्तर कलकत्ता टोलीगंज, बेहाला लिलुआ, हिंदमोटर की शाखा परिषदों ने अपनी सहभागिता दर्ज की। अभिनव सामायिक में 1500 से अधिक भाई बहनों ने हिस्सा लिया। अभिनव सामायिक का प्रयोग मुनि जिनेश कुमार जी व मुनि परमानंदजी ने कराया। अभिनव सामायिक के संदर्भ में प्रेरणा प्रदान करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा- प्रत्येक व्यक्ति सफलता चाहता है। सफलता का सूत्र है वर्तमान में जीना। वर्तमान में जीने का तात्पर्य हुआ समता से जीना। समता की साधना का उपाय सामायिक है। सामायिक अहं से अहंम मृत्यु से

अमरत्व, विभाव से स्वभाव की यात्रा है। सामायिक में पापकारी प्रवृत्ति का त्याग किया जाता है। आत्मा में रमण करना ही सामायिक है। नमस्कार महामंत्रोच्चार से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। स्वागत वक्तव्य ते.यु.प. साउथ हावड़ा के अध्यक्ष गगनदीप बैद ने दिया। अभिनव सामायिक कार्यक्रम के बंगाल संयोजक नमन जम्मड ने अपने विचार व्यक्त किये।

आभार ज्ञापन सहमंत्री राहुल दुगड़ ने किया। अभिनव सामायिक के प्रायोजक दीपक बोथरा रहे।

वाशी

अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद वाशी के तत्वावधान में अभिनव सामायिक का आयोजन अणुव्रत सभागार वाशी, नवी मुंबई में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से किया गया। मंगलाचरण तेरापंथ युवक परिषद वाशी द्वारा किया गया। प्रवक्ता उपासक दिनेश कोठारी ने अभिनव सामायिक का प्रयोग कराया। अभिनव सामायिक के प्रयोग के बाद उपासक लक्ष्मीलाल सिंघवी ने सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहार विशुद्धि, सूक्ष्म संपराय और यथाख्यात चारित्र की चर्चा की। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा वाशी अध्यक्ष पंकज चंडालिया ने सबका स्वागत किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन तेरापंथ सभा वाशी मंत्री पवन परमार ने किया। कार्यक्रम में लगभग 350 सामायिक हुई।

भीलवाड़ा

अभातेयुप के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद् संस्था भीलवाड़ा ने तेरापंथ भवन, तेरापंथ नगर में साध्वी कीर्तिलताजी ठाणा-4 के सान्निध्य में अभिनव सामायिक कार्यक्रम का आयोजन किया। साध्वीश्री जी ने सामायिक के महत्व समझाते हुए बताया कि 48 मिनट की सामायिक से हम अपने कर्मों की विपुल निर्जरा कर सकते हैं। लगभग 1000 श्रावक-श्राविकाओं ने सामायिक की साधना की।

शमा, गुजरात

पर्युषण पर्व के तृतीय दिवस के अवसर पर प्रवक्ता उपासिका कमलाबाई चोरड़िया एवं सहयोगी उपासिका भावना सांखला के निर्देशन में अभिनव सामायिक का आयोजन

किया गया। एक साथ, एक स्थान पर सामूहिक रूप से त्रिपदी वंदना कर नमस्कार महामंत्र का उच्चारण करते हुए सामायिक का सामूहिक प्रत्याख्यान किया गया। जप, ध्यान, स्वाध्याय आदि साधना का प्रयोग किया।

अमराईवाड़ी-ओढव

अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद, अमराईवाड़ी-ओढव द्वारा सिंघवी भवन, अमराईवाड़ी में साध्वी काव्यलता जी के सान्निध्य में सामूहिक सामायिक प्रत्याख्यान से अभिनव सामायिक का शुभारंभ हुआ। सैकड़ों व्यक्तियों ने त्रिपदी वन्दना एवं जपयोग से पंच परमेष्ठी का ध्यान किया। साध्वी सुरभिप्रभाजी ने मधुर स्वरों में लोगसस का भाव पूर्ण उच्चारण किया। सामायिक के दूसरे चरण में साध्वी ज्योतियशाजी ने ज्योति-केन्द्र प्रेक्षा का प्रयोग करवाया। साध्वी काव्यलता जी ने स्वाध्याय योग का शुभारंभ करते हुए अपने उद्बोधन में कहा- सामायिक समता की साधना है। सामायिक की महिमा गाने वाले बहुत मिलेंगे पर सामायिक करने वालों की संख्या दिन प्रतिदिन कम हो रही है। सामायिक तनाव मुक्ति का सफल उपाय है। सामायिक करने वाला विभाव से स्वभाव की ओर प्रस्थान करता है। आचार्य श्री तुलसी ने अभिनव सामायिक का प्रयोग प्रदान कर युवा पीढ़ी को एक नया संदेश प्रदान किया। साध्वी राहतप्रभाजी ने सामायिक पर अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन साध्वी ज्योतियशाजी ने किया। अभिनव सामायिक में लगभग 200 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही।

कांटाबांजी

अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद कांटाबांजी द्वारा समणी निर्देशिका जिनप्रज्ञा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन कांटाबांजी में सामायिक दिवस के अवसर पर अभिनव सामायिक का कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें लगभग 250 सामायिक हुई।

पाली

अभातेयुप द्वारा निर्देशित अभिनव सामायिक कार्यक्रम मुनि सुमति कुमार जी के सान्निध्य में आयोजित किया गया। मुनि श्री ने कहा कि सामायिक चार प्रकार की बताई गई है- सम्यक्त्व, श्रुत, देश-विरति, अविरति। श्रावक के 12 व्रत में नवमां व्रत है सामायिक।

आजकल नकली सामायिक ज्यादा हो रही है हमें असली सामायिक करने का प्रयत्न करना चाहिए, जिससे हमारी उन्नति होती है। शुद्ध सामायिक करने का प्रयत्न करें। संवर और निर्जरा के द्वारा आत्मा को उज्ज्वल बनाया जा सकता है। मुनि देवार्यकुमार जी ने तीर्थंकर की माता के सपनों पर प्रकाश डाला। मुनि आगमकुमार जी ने गीतिका की प्रस्तुति कर अपने विचार रखे। राहुल बालड़ ने अभिनव सामायिक गीतिका की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम के प्रायोजक प्रकाशचंद पवनकुमार सौरभ अक्षय डागा परिवार की ओर से श्रावक-श्राविकाओं को सामायिक किट भेंट किया गया। ऋषिता वोहरा ने 12 की तपस्या के प्रत्याख्यान किए।

टी दासरहल्ली

अभातेयुप के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद् टी.दासरहल्ली द्वारा पर्युषण महापर्व के तीसरे दिन अभिनव सामायिक का आयोजन हुआ। उपासक मांगीलाल पितलिया, नैनमल कोठारी की उपस्थिति में स्थानीय तेरापंथ भवन में श्रावक-श्राविकाओं द्वारा सामायिक आराधना की गई। नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। तेयुप पूर्व अध्यक्ष मुकेश चावत, कन्हैयालाल गांधी ने विजय गीत का संगान किया। सभा-ट्रस्ट अध्यक्ष भगवतीलाल मांडोत ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। अध्यक्ष कन्हैयालाल गांधी ने पधारे हुए श्रावक-श्राविका समाज का स्वागत किया। उपासक नैनमल कोठारी ने कहा कि भारत की अध्यात्म परंपरा में सभी धर्मों का सार है संतुलित जीवन-शैली। यह समता से प्राप्त होती है और उसका प्रयोगात्मक अनुष्ठान है- सामायिक। युवा शक्ति इस अनुष्ठान में प्रतिदिन स्वयं को संभागी बनाए। कहा जाता है कि सामायिक में श्रावक सीमित समय के लिए साधुता का उदाहरण बन जाता है। अभिनव सामायिक अनुष्ठान में ज्ञानशाला प्रशिक्षिका द्वारा त्रिपदी वंदना करवाई गई। इस अवसर पर परिषद शाखा प्रभारी एवं मुख्य अतिथि गौतम खाब्या, परामर्शक लादुलाल बाबेल ने अपने विचार व्यक्त किए। अभातेयुप परिवार से विनोद मुथा, कमलेश गन्ना की विशिष्ट उपस्थिति रही। सभा-ट्रस्ट परिवार, महिला मंडल, युवक परिषद् की सहभागिता रही। कार्यक्रम का संचालन व आभार मंत्री शुभम बाबेल ने किया।



नवरात्रि अनुष्ठान को विधिवत मनाकर ऊर्जा सम्पन्न बना जा सकता है

● मुनि कमलकुमार ●

जै न धर्म का वर्चस्व अहिंसा, संयम और तप से बढ़ा है, इसे हम धर्म की आधारशिला भी कह सकते हैं। अहिंसा, संयम और तप व्यक्ति को मानव से महामानव की और गतिमान करते हैं। वर्तमान में पर्वों का अम्बार सा नजर आता है। अधिकतर पर्व इन तीनों से कम जुड़े नजर आते हैं। मौज मस्ती से व्यक्ति का व्यक्तित्व नहीं निखरता। हमें जो संस्कार

मिले हैं उससे आत्मकल्याण के साथ धर्म प्रभावना का क्रम भी बनता है।

नवान्हिक अनुष्ठान प्रतिवर्ष दो बार मनाया जाता है, दोनों ही शुक्ल पक्ष में मनाए जाते हैं। आश्विन शुक्ला और चैत्र शुक्ला पक्ष प्रारम्भ होते ही देश विदेश में जैन-अजैन प्रायः सभी इसे मनाते हैं। तेरापंथ धर्मसंघ के नवमाधिशास्ता आचार्य श्री तुलसीने कई आयाम दिए उसमें नवरात्रि का भी नवीनीकरण

किया। नव ही दिन सूर्योदय से पूर्व जप अनुष्ठान, प्रवचन के समय भी आगमवाणी के साथ लोगस्स के कुछ श्लोक, उनके चरण का सामूहिक जाप, दोपहर में आगम स्वाध्याय, नव ही दिन यथाशक्ति तप का क्रम भी रहता है। इस प्रकार अपने आप को ऊर्जा सम्पन्न बनाया जा सकता है। नव ही दिन ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए जमीकंद का भी परिहार बताया गया है। हमारा त्याग ही

हमारा सौभाग्य बढ़ाता है। हम देखते हैं कि तब से अब तक इस नवान्हिक अनुष्ठान को चारित्र आत्माओं के सान्निध्य में अथवा व्यक्तिगत रूप से भी मनाया जाता है। यह विधि नितांत हिंसा से अहिंसा की ओर, असंयम से संयम की ओर, भोग से त्याग की ओर ले जाने वाली है। हम गुरुदेव के अत्यंत आभारी हैं जिन्होंने नवरात्रि जैसे पावन अनुष्ठान को मनाने की विधि प्रदान कर

सबको अध्यात्ममय बना दिया। आचार्य श्री महाश्रमण जी ने द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव के अनुसार जो प्रातः सूर्योदय से पूर्व जाप का क्रम था इसे शाम अर्हत वंदना के बाद करके नवरात्रि अनुष्ठान को और व्यापक बना दिया, यह सबके लिए सुगम हो गया। अपेक्षा है कि सभी इस आध्यात्मिक अनुष्ठान का लाभ उठाकर स्वयं को ऊर्जा सम्पन्न बनाने का प्रयास करें।

31वें विकास महोत्सव के विविध कार्यक्रम

नई दिल्ली

31वें विकास महोत्सव का कार्यक्रम साध्वी कुन्दनरेखाजी के सान्निध्य एवं तेरापंथी सभा दिल्ली के तत्वावधान में अणुव्रत भवन में हुआ। इस अवसर पर साध्वी कुन्दनरेखाजी ने कहा- तेरापंथ धर्मसंघ के विकास की दिशा है आध्यात्मिक उन्नयन, और इसकी साधना है प्रशिक्षण एवं हृदय परिवर्तन। इसके निर्माण में चार मुख्य भूमिकाएं कार्य करती हैं- आचार-विचार की पवित्रता, अहंकार और ममकार का विसर्जन, अनुशासन, और विकास। संघीय विकास की दर सदैव उन्नत रही है और इसका कारण है पारस्परिक सौहार्द, सेवा, विहार क्षेत्रों में संवृद्धि, सार-संभाल, जनसंपर्क, साहित्य सृजन, वक्तृत्व, संगीत एवं अन्य आध्यात्मिक कलाओं का योग। इन सभी में आचार्यों की समझ, आगम ज्ञान, और आध्यात्मिक विद्वता का सुंदरतम योग रहा है। आचार्य भिक्षु से पूज्य कालूगणी तक अनेक विकास के पथ प्रशस्त हुए। गुरुदेव तुलसी ने न केवल धर्मसंघ को अंतरराष्ट्रीय पहचान दी, बल्कि तेरापंथ संघ को जैन धर्म का पर्याय बनाया। उन्होंने जैन विश्व भारती, आगम संपादन, अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान के जरिये अंतर्चेतना को जागृत किया। वर्तमान में आचार्य श्री महाश्रमण

इस परंपरा को और ऊंचाइयों तक ले जा रहे हैं। प्रलम्ब यात्राएं, शनिवार की सामायिक, पंचाचार की साधना, सुमंगल साधना आदि आत्मशोधन के कार्य कर रहे हैं।

साध्वी सौभाग्यशशाजी ने कहा कि वर्तमान युग विकास के नाम पर विध्वंसता की ओर बढ़ता नजर आ रहा है। युद्ध की विभीषिका चारों तरफ हिंसा का तांडव रच रही है। ऐसे समय में जैन धर्म का प्रतिनिधि तेरापंथ संघ मानवीय मूल्यों की जीवंतता हेतु अध्यात्म के आलोक में मानव मात्र को नई दिशाएं प्रदान कर उत्थान के मार्ग को उद्घाटित कर रहा है। साध्वी कल्याणशशाजी ने कहा कि प्रतिकूल में अनुकूल, नकार में सकार, और नकारात्मक में सकारात्मक दृष्टि को खोज लेना गुरुदेव तुलसी की मौलिक विशेषता थी। उन्होंने व्यक्तियों का निर्माण, साहित्य सृजन और जनसंपर्क द्वारा विकास के नए द्वार खोले। हम सौभाग्यशाली हैं कि हम इस विकासशील धर्मसंघ में निरंतर आत्मा को शुद्ध कर कर्मों की निरंतर निर्जरा कर रहे हैं।

इस अवसर पर पन्नालाल वैद, तेरापंथ सभा के उपाध्यक्ष गिरीश जैन, मॉडल टाउन सभा के अध्यक्ष प्रसन्न जैन, युवक परिषद के मंत्री मुदित लोढ़ा, हीरालाल गेलड़ा, महिला मंडल की पूर्व अध्यक्ष मंजु जैन, कल्पना सेठिया, कविता सुरेश जैन,

गीता सुशील जैन ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का कुशल संचालन विकास बोधरा ने किया।

विधाधर नगर, जयपुर

विकास पुरुष आचार्य श्री तुलसी का युग तेरापंथ का स्वर्णिम युग था। उनके नेतृत्व में तेरापंथ धर्मसंघ ने बहुमुखी विकास किया। उन्होंने संघ की प्रगतिशीलता को अध्यात्म का आधार और विज्ञान की दृष्टि दी। उक्त विचार 'शासन गौरव' साध्वी कनकश्रीजी ने तेरापंथी सभा जयपुर के तत्वावधान में विद्याधर नगर स्थित तेरापंथ भवन में आयोजित विकास महोत्सव कार्यक्रम में व्यक्त किए।

साध्वी कनकश्रीजी ने कहा- विद्वानों की दृष्टि में पिछली तीन शताब्दियों में आचार्य श्री तुलसी जैसा प्रखर ऊर्जा पुंज व्यक्तित्व और आचार्य श्री महाप्रज्ञ जैसा गंभीर दार्शनिक संत नहीं देखा।

गुरुदेवश्री की कल्पवृक्षी सन्निधि के अविस्मरणीय संस्मरण सुनाकर साध्वीश्री ने उपस्थित श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया। साध्वीवृंद ने भावपूर्ण गीत की प्रस्तुति दी। साध्वी मधुलता जी ने अपने संबोधन में कहा- गुरुदेव तुलसी आधुनिक तेरापंथ के निर्माता थे। उन्होंने तेरापंथ धर्मसंघ में विकास के नए आयाम उद्घाटित किए। साध्वी मंजुलेखाजी व साध्वी समितिप्रभा जी ने संस्कृत

अष्टकों की प्रस्तुति दी। महिला मण्डल सी स्कीम जयपुर की बहनों ने सुन्दर गीतिका द्वारा आस्था की अभिव्यक्ति दी। तेरापंथी सभा जयपुर के अध्यक्ष शंतिलाल गोलछा तथा तेयुप से श्रेयांस पारख ने प्रासंगिक विचार प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का कुशल संयोजन साध्वी संस्कृतिप्रभाजी ने किया।

उदयपुर

डॉ. साध्वी परमयशशाजी ने 31वें विकास महोत्सव कार्यक्रम में कहा कि किसी देश की प्रतिष्ठा नामी कम्पनियों, कल कारखानों, नामचीन हस्तियों से ही नहीं होती, देश की प्रतिष्ठा होती है ऋषि-मुनियों के चरित्र, चिंतन, आचार और व्यवहार से। 20वीं सदी में राजस्थान की पावन धरा पर एक प्रकाशपुंज बनकर आए आचार्य तुलसी का जीवन आश्चर्यों की वर्णमाला है।

वे पावरफुल जीवन जीते। उनकी मैत्री, विद्वता, वैराग्य और करुणा ने देश के दिग्गजों को प्रभावित किया। साध्वीवृंद ने 'तुलसी नाम समस्या को करता है छूमंतर' कार्यक्रम की रोचक प्रस्तुति दी। तेरापंथ महिला मंडल ने मंगलाचरण में 'युगप्रधान ने युगधारा को दिए नए अवदान' गीत की सुंदर प्रस्तुति दी।

साध्वी विनम्रयशशाजी, साध्वी मुक्ताप्रभाजी और साध्वी कुमुदप्रभाजी

ने पृथक-2 कविता के माध्यम से विकास पुरुष के प्रति भावों की अभिव्यक्ति दी।

विकास महोत्सव पर तेरापंथ सभाध्यक्ष कमल नाहटा, लक्ष्मण सिंह कर्णावट, तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा सीमा बाबेल, कैलाश बाबेल, गीता चौरडिया, कांता खिमावत आदि ने अपने विचार रखे।

श्रीदुंगरगढ़

31वां विकास महोत्सव श्रीदुंगरगढ़ के मालू भवन में 'शासनश्री' साध्वी कुशुश्रीजी के सान्निध्य में आयोजित किया गया। साध्वीश्री ने अपने उद्बोधन में कहा- आचार्य तुलसी तेरापंथ के नवम अधिशास्ता थे। विश्व की विरल विभूति, बीसवीं सदी के देदीप्यमान सूर्य, क्रान्तिकारी आचार्य थे। उन्होंने धर्मक्रांति की, अणुव्रत आन्दोलन का सूत्रपात किया।

नैतिक मूल्यों की स्थापना की, वे स्वस्थ समाज के प्रणेता थे। हम गुरुदेव के सपनों को साकार करें, उनके अवदानों को आगे बढ़ाते रहें। साध्वी सम्यक्त्वप्रभाजी ने तुलसी अष्टकम से मंगलाचरण किया। साध्वी पुनीतप्रभा जी ने अपने विचार प्रस्तुत किये। सभा के मंत्री प्रदीप पुगलिया, तेयुप से अक्षत पुगलिया, महिला मंडल से किरण घीया ने अपने विचार अभिव्यक्त किये। साध्वी जीतयशशाजी ने कुशल संचालन किया।



11 की तपस्या का संकल्प कर मासखमण कर दिखलाया

डोंबिवली।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमार जी के सान्निध्य में मासखमण अनुमोदना कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुनि श्री ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि वर्तमान युग उपभोक्तावादी युग है। व्यक्ति दिन में कई बार खाता-पीता है, फिर भी कमजोरी महसूस करता है। श्राविका केसर देवी परमार ने मुनि नमिकुमार जी के 51 की तपस्या पर 11 की तपस्या का संकल्प लिया था परंतु इन्होंने मासखमण कर मूल से ज्यादा ब्याज चुकाया है। इनकी तपस्या में परिवार के सब सदस्यों का समुचित सहयोग प्राप्त हुआ इसीलिए इनका मासखमण आज निर्विघ्न पूर्ण हो रहा है। इनका मनोबल देखकर परिवार के अन्य सदस्य भी अपना मनोबल बढ़ाएं और तपस्या का लाभ उठाएं। तपस्या से केवल आत्मा की ही उज्ज्वलता नहीं

बढ़ती, नाना प्रकार के विजातीय तत्वों का भी शमन होता है, जिससे शरीर भी पूर्ण स्वस्थ बन जाता है। शरीर हमारा परम सहायक है, इसे सुरक्षित व स्वस्थ रखने के लिए तपस्या बड़ी सहायक होती है। तपस्या में जप, ध्यान, स्वाध्याय, कायोत्सर्ग, सामायिक, पौषध आदि का क्रम भी रहे तो बाह्य तपस्या के साथ अर्थात्तर तपस्या का क्रम भी चल सकता है। इस अवसर पर पारिवारिक सदस्यों ने मधुर गीत का संगान किया। कियारा परमार ने दादी की तप अनुमोदना में अपनी भावना व्यक्त की। साध्वी प्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी द्वारा प्रदत्त संदेश का वचन चंदनमल धींग ने किया, जिसे महिला मंडल की सदस्याओं ने तपस्विनी बहन को भेंट किया।

इस अवसर पर मुनि नमिकुमारजी ने 24 दिन की तपस्या एवं निशा इंटोदिया ने 22 दिन की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

क्षमा याचना पारस्परिक सौहार्द का मुक्ताहार है

अमराईवाड़ी।

साध्वी काव्यलताजी के सान्निध्य में क्षमा याचना का कार्यक्रम नमस्कार महामन्त्र से सिंघवी भवन, अमराईवाड़ी में प्रारंभ हुआ। साध्वी ज्योतिशशा, साध्वी सुरभिप्रभाजी, साध्वी राहतप्रभाजी ने 'मैत्री मन्त्र महान' गीत का मधुर संगान कर जनता को क्षमा के निर्झर में प्रवाहित किया। साध्वी काव्यलताजी ने अपने उद्बोधन में कहा- क्षमा जीवन का उपहार है, तन-मन का श्रृंगार है, पारस्परिक सौहार्द का मुक्ताहार है।

आज के दिन हम क्षमा को समझें

और जिनके साथ हमारे कटु सम्बन्ध हैं, बोल चाल बन्द है, वैर विरोध की गौंठ है, उनसे खमत खामणा कर मैत्री की धारा प्रवाहित करें।

साध्वीश्री ने आचार्य प्रवर, धर्मसंघ के सभी चारित्रात्माओं, अहमदाबाद में प्रवासी सभी चारित्रात्माओं, अहमदाबाद एवं विशेष कर अमराईवाड़ी जैन समाज के श्रावक-श्राविकाओं से खमतखामणा किया। सर्वप्रथम तेरापंथ सभा अध्यक्ष नवरतनमल जैन एवं विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारी गण ने सरल हृदय से खमत खामणा किया। मंच का संचालन तेयुप मंत्री सुनील चिप्पड़ ने किया।

संक्षिप्त खबर

चित्त समाधि शिविर आयोजित

राउरकेला। अभातेमम के निर्देशानुसार चित्त समाधि शिविर का आयोजन तेरापंथ महिला मंडल राउरकेला द्वारा प्रवक्ता उपासक भगवती भंडारी एवं सहयोगी उपासक परेश भंडारी की विशेष उपस्थिति में आयोजित किया गया। नमस्कार महामन्त्र के उच्चारण के साथ कार्यशाला की शुरुआत हुई। मंडल की बहनों ने मंगलाचरण किया। उपासक द्वय ने चित्त समाधि के बारे में जानकारी देते हुए अपनी जीवन शैली प्रभावी, रिश्ते मजबूत बनाने की प्रेरणा दी। महाप्राण ध्वनि तथा मंगल भावना के साथ साथ ध्यान का सुंदर प्रयोग करवाया गया। सभी का स्वागत अध्यक्ष तरुलता जैन ने किया। कार्यशाला का संचालन मंत्री कविता डागा ने किया।

तपस्या आत्म शोधन का महानतम उपाय है

नई दिल्ली।

तेरापंथ सभा दिल्ली के तत्वावधान में साध्वी कुन्दनरेखाजी के सान्निध्य में अणुव्रत भवन में तप अभिनन्दन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री ने कहा- संयम का महानतम उपक्रम है तपस्या। इस प्रयोग से आसक्ति को परास्त कर तपस्वी अन्तर्चेतना को शुद्ध बनाता है। जीवन की अनन्त संभावनाओं पर लगे ताले को तपस्या की चाबी से खोला जा सकता है। इसलिए तपस्वी अभिनंदनीय एवं अनुशंसनीय होता है।

अणुव्रत भवन में अशिका दुगड़ 15 दिन, अंकुर दुगड़ 8 दिन, मंजु कोठारी 13 दिन, राजेश दुगड़ 8 दिन, प्रांजल खटेड़ 15 दिन, पवन बैद 8 दिन, महेश खटेड़ 8 दिन, नखत सिंघी 8 दिन आदि तपस्वियों की अनुमोदना करते हुए साध्वीश्री ने कहा मोक्ष के चार मार्ग में एक तपस्या भी है। इस शक्ति से शिखर का स्पर्श किया जा सकता है।

साध्वी सौभाग्यशशा जी ने कहा - भैक्षव शासन में तपस्या करने वाले श्रावक-श्राविकाएं एवं साधु-साधवियां अपने कर्मों की उत्कृष्ट निर्जरा कर रहे हैं। प्रत्येक वर्ष तपस्या की झड़ी

लगती है। सूरत में तो मानो तपस्या की मूसलाधार वर्षा हो रही है, नई दिल्ली में भी भाई-बहनों का उत्साह सराहनीय है। साध्वी कल्याणशशा जी ने कहा कि तप जीवन का आधार है, मुक्ति का द्वार है। दिल्ली तेरापंथ सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया ने कहा हिम्मती मनुष्य तप कर आत्मानन्द में डूबकियां लगाते हैं। तपस्या के मार्ग का अनुसरण विरले ही कर पाते हैं। समाज भूषण मांगीलाल सेठिया ने भी तपस्वियों के प्रति अपने उदाहार व्यक्त किए। कार्यक्रम का कुशल संचालन सभा मंत्री प्रमोद घोड़ावत ने किया।

साधना की मूल कुंजी है सामायिक

जोरावरपुरा।

पर्युषण महापर्व का तीसरा दिन बड़े ही उल्लास के साथ जोरावरपुरा में साध्वी शशिरेखा जी आदि ठाणा पांच के सान्निध्य में मनाया गया।

अभातेयुप द्वारा निर्देशित अभिनव सामायिक कार्यक्रम के अवसर पर साध्वी कांतप्रभाजी ने उपस्थित परिषद को अभिनव सामायिक की जानकारी प्रदान की।

सामायिक में त्रिपदी वंदना, जप व प्रेक्षा ध्यान का प्रयोग करवाया गया।

साध्वी श्री ने कहा कि सामायिक ही हमारी आत्मा है। आत्मा में निवास करने के लिए सामायिक करना चाहिए। सामायिक द्रव्य व भाव दोनों प्रकार की होनी चाहिए।

आचार्य तुलसी द्वारा अभिनव सामायिक उपक्रम को शुरू किया गया। सामायिक एक आवश्यक तत्व की उपलब्धि है।

एक मुहूर्त की सघन साधना ही सामायिक है। सामायिक करने से व्यक्ति के 84 लाख योनि के कुछ भव कम हो सकते हैं। 48 मिनट की

सामायिक में अपनी आत्मा में निवास कर, मन को एकाग्र कर, स्वाध्याय के साथ मन की मलिनता को धोया जा सकता है।

साध्वी श्री ने तेरापंथ धर्मसंघ के विशिष्ट श्रावक मिश्रीमल सुराणा व पूनिया श्रावक की सामायिक के उदाहरण को बताते हुए सभी भाई-बहनों को प्रतिदिन सामायिक स्वाध्याय करने की प्रेरणा दी। तेयुप अध्यक्ष सुनील मरोठी और सुरेंद्र कुमार बुच्चा ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

पृष्ठ 1 का शेष

मद और शोक दोनों....

साध्वीप्रमुखाश्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि हमारे समाज में नारी को लक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा के रूप में देखा जाता है। हमारे देश में नारी का गौरवपूर्ण इतिहास है। एक समय था जब नारी को अनेक सामाजिक कुरीतियों को सहना पड़ता था पर आज दृश्य दूसरा है। आज नारी ने हर क्षेत्र में विकास किया है। महिलाएं शिक्षित हो रही हैं, उनमें जागृति आ रही है। उसका एक रूप है- अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल। इसके माध्यम से समाज की कन्याओं का भी विकास हो रहा है।

गुजरात राज्य के राज्यपाल महामहिम आचार्य देवव्रत ने कहा कि मैं तो आचार्यश्री महाश्रमणजी के परिवार का सदस्य जैसा बन गया हूँ। मुझे भी यहां आने से बहुत सी प्रेरणाएं मिलती हैं। आचार्यश्री ने तो पूरा जीवन मानव

कल्याण में लगा दिया है। जैन समाज का तेरापंथ धर्मसंघ मानव कल्याण के सामाजिक कार्य एवं संस्कारों को स्थापित करने का कार्य हो रहा है।

प्राचीन काल में नारी की स्थिति पुरुषों से भी ऊंची थी। मध्यकाल में नारी का दमन हुआ पर वर्तमान में नारी शिक्षित हो विकास की ऊंचाइयों को छू रही है। शिक्षा एवं अन्य कई क्षेत्रों में हमारी बहन-बेटियों ने कीर्तिमान स्थापित किये हैं। आभार ज्ञापन महामंत्री श्रीमती नीतू ओस्तवाल ने किया। राष्ट्रगान से कार्यक्रम संपन्न हुआ।

मानव जीवन पाकर...

परम पावन आचार्य प्रवर की अनुज्ञा से नोखा में 'शासन गौरव' साध्वी राजीमतीजी द्वारा 16 सितंबर को मुमुक्षु मानवी की जैन भागवती दीक्षा हुई थी। नोखा का संघ पूज्यवर की सन्निधि में पहुंचा। नोखा महिला मंडल ने गीत की

प्रस्तुति दी। नोखा सभाध्यक्ष शुभकरण चोरडिया ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की। पूज्यप्रवर की सन्निधि में तथा अभातेमम के तत्वाधान में आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना के अंतर्गत तत्वज्ञान व तेरापंथ प्रचेता कार्यशाला के आयोजन के संदर्भ में परियोजना की निदेशक पुष्पा बैगाणी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। तेरापंथ युवक परिषद् एवं तेरापंथ किशोर मंडल अहमदाबाद के सदस्यों का संघ पूज्य चरणों में उपस्थित हुआ। तेयुप अहमदाबाद ने गीत की प्रस्तुति दी।

अहमदाबाद तेयुप अध्यक्ष ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की। पटना से समागत तनसुख बैद ने कल्याण मंदिर स्तोत्र का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद पूज्यवर को समर्पित किया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।



संयम से आत्मा को भावित करने का पर्व है पर्युषण

गंगाशहर

खाद्य संयम दिवस- श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा गंगाशहर के तत्वावधान में तेरापंथ भवन में साध्वी चरितार्थप्रभाजी एवं साध्वी प्रांजल प्रभा जी के सान्निध्य में पर्युषण महापर्व का प्रथम दिवस खाद्य संयम दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर साध्वी चरितार्थप्रभा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि एक जैसा जीवन व्यक्ति को पसंद नहीं होता है, नवीनता, उत्साह व उमंग लाने के लिए समय-समय पर पर्व मनाए जाते हैं। पर्युषण महापर्व बाहर की दुनिया से भीतर की दुनिया में प्रवेश करने का महापर्व है। आसक्ति से अनासक्ति, वासना से उपासना, राग से विराग की ओर प्रस्थान ही पर्युषण है। साध्वी प्रांजलप्रभाजी ने कहा कि पर्युषण महापर्व पर्वों में अनुत्तर है, सर्वोत्तम है। इस पर्व में धर्म का पोषण होता है। यह आत्म शुद्धि का प्रेरक पर्व है, अतः इस महापर्व कहते हैं। उन्होंने तेइसवें तीर्थंकर भगवान पार्ष्वनाथ के बारे में बताते हुए उवसगहर स्तोत्र की महत्ता बताई। साध्वी वैभवयशाजी ने खाद्य संयम के बारे में बताते हुए कहा कि साधना का पहला पैरामीटर है- खाद्य संयम। निर्जरा का पहला प्रकार है- अनशन, जिसके अंतर्गत एक दिन से 6 माह तक का उपवास आता है। उन्होंने बताया कि 15 दिन में एक उपवास करना स्वास्थ्य की दृष्टि से भी बहुत महत्वपूर्ण है।

स्वाध्याय दिवस- साध्वी चरितार्थ प्रभा जी ने भगवान महावीर के मरीचि कुमार के भव का वर्णन किया। उन्होंने कहा कि जैन धर्म ईश्वर को आठ कर्मों की मुक्त अवस्था के रूप में मानता है। जीवन में चाहे जितनी सुख सुविधा मिल जाए, अगर सम्यक्त्व नहीं आया, तो सब व्यर्थ है। शुद्ध दान, शुद्ध भावना और पवित्रता से सम्यक्त्व आता है। साध्वी प्रांजलप्रभा जी ने बताया कि जिस प्रकार पारसमणि लोहे को भी सोना बना देती है, वैसे ही भक्त यदि पूरी श्रद्धा व एकाग्रता से पार्ष्व स्तुति करता है तो निश्चित ही आत्मा की शुद्धि होती है।

वाणी संयम दिवस- साध्वी चरितार्थप्रभा जी ने कहा कि जैन धर्म में राग-द्वेष को क्षय करना महत्वपूर्ण माना गया है। वाणी संयम दिवस के अवसर पर सभी को गुस्सा नहीं करने का संकल्प करवाया। साध्वी प्रांजलप्रभा जी ने आचार्य भद्रबाहु द्वारा रचित उपसगहर स्तोत्र का विवेचन किया। साध्वी कृतार्थप्रभा जी ने वाणी के महत्व को उजागर किया।

अणुव्रत चेतना दिवस- साध्वी चरितार्थप्रभा जी ने तीर्थंकरों के गुणों का

वर्णन करते हुए कहा कि तीर्थंकर भगवान में अनंत ज्ञान, दर्शन, चरित्र, आनंद समाया हुआ है। हमें प्रतिदिन जप स्वाध्याय करना चाहिए जिससे हमारा आभामंडल इतना शुभ हो जाए की कोई विघ्न, बाधा हमारे निकट ही नहीं आ सके। साध्वी प्रांजलप्रभा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि भक्ति भावों पर निर्भर करती है। जैसा भाव, वैसा स्वभाव। हाथों के साथ हृदय जुड़ जाए तो भावना के साथ भक्ति से स्पंदन बढ़ जाता है और भक्ति शक्तिशाली हो जाती है। अगर जप में निरंतरता होती है तो वह सिद्धि बन जाता है और भौतिक संपन्नता बढ़ती है। साध्वी मध्यस्थप्रभा जी ने कहा कि मनुष्य बाह्य विकास को देखकर आंतरिक विकास को भूल जाते हैं। जबकि मनुष्य को आंतरिक विकास पर ध्यान देना चाहिए। अणुव्रत दिवस के अवसर पर छोटे-छोटे संकल्प करें, जिनसे जीवन को नया मोड़ दे सकें। जप दिवस- साध्वी चरितार्थप्रभा जी ने कहा कि लोक में प्रकाश जब-जब होता है, जब तीर्थंकरों का जन्म महोत्सव, दीक्षा कल्याणक, कैवल्य ज्ञान का महोत्सव, निर्वाण को प्राप्त करते हो। साध्वी श्री ने कहा कि थोड़ी उम्र मिले और वह सुख-शांति से बीते तो सबसे अच्छा, लेकिन अधिक उम्र मिले और दुर्भाग्य साथ रहे, कष्ट रहे, बीमारियां रहे, तो अधिक उम्र मिलना भी कष्टकारी है। साध्वी प्रांजलप्रभा जी ने कहा कि गौतम स्वामी ने प्रभु महावीर से पूछा की वंदना करने से क्या होता है? भगवान महावीर ने कहा कि वंदना करने से नीच गोत्र का बंधन नहीं होता है और उच्च गोत्र का बंधन होता है, आठ कर्मों का क्षय हो सकता है। साध्वी रुचिप्रभाजी ने गीतिका प्रस्तुत की एवं शोभ जी श्रावक की घटना का वर्णन करते हुए जप करने की प्रेरणा दी।

ध्यान दिवस- साध्वी चरितार्थप्रभा जी ने कहा कि दुनिया में कुछ लोग जागते हुए भी सोते हैं और कुछ लोग सोते हुए भी जागते हैं। साध्वी श्री ने भगवान महावीर की दीक्षा प्रसंग को व्याख्यायित करते हुए कहा कि भगवान ने अभय की साधना का संकल्प लिया था। साध्वी प्रांजलप्रभाजी ने कहा कि 84 लाख जीव योनि में भटकाव करके मनुष्य भव मिला है, इसमें प्रमाद न कर आत्मा का कल्याण करें। क्षण भर भी सम्यक्त्व का स्पर्श हो जाए तो मोक्ष का मार्ग प्रशस्त हो जाता है। सम्यक्त्व के अभाव में किया गया तप, त्याग, ध्यान आदि अकाम निर्जरा होगी। हमें कर्म रूपी मोती को सम्यक्त्व रूपी हंस के मुख में रखना आ गया तो मोक्ष का मार्ग निश्चित है। साध्वी आगमप्रभा जी ने कहा कि ध्यान

का अर्थ अपने भीतर जाना, अपने अन्दर देखना होता है।

भगवती संवत्सरी महापर्व - श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के तत्वाधान में तेरापंथ भवन में मुनि श्रेयांसकुमार जी, साध्वी चरितार्थप्रभा जी एवं साध्वी प्रांजलप्रभा जी के सान्निध्य में भगवती संवत्सरी महापर्व मनाया गया। इस अवसर पर मुनि श्रेयांसकुमार जी ने कहा कि पर्युषण महापर्व आत्मशोधन का पर्व है। आज के दिन जिस-जिस से भी वैर-विरोध हुआ हो और उनसे खमत खामणा न हो तो श्रावक का श्रावकत्व चला जाता है। प्रत्येक व्यक्ति से, प्राणी मात्र से, शुद्ध हृदय से क्षमायाचना कर अपनी आत्मा को पवित्र बनाना चाहिए।

साध्वी चरितार्थप्रभा जी ने कहा कि संवत्सरी का पर्व हमारे लिए महत्वपूर्ण पर्व है। संवत्सर का अर्थ है वर्ष, अर्थात् साल में एक बार आने वाला दिन। आचार्यों ने कहा कि यह सभी प्राणियों के कल्याण का दिवस है, इसलिए आचार्यों ने इसे श्रावक-श्राविकाओं के लिए त्याग, तप, ध्यान, स्वाध्याय आदि अनुष्ठान से जोड़ा। तप चार प्रकार के होते हैं- शरीर का कायिक तप, वाचिक तप, मानसिक तप, भावनात्मक तप। आज के दिन हमें संकल्प करना है कि हम आत्मा की उन कमियों और बुराइयों को दूर करें जो हमारे मोक्ष मार्ग की बाधाएं हैं। साध्वी प्रांजलप्रभा जी ने कहा कि लोग उपकार को भूल जाते हैं पर एक बात होने पर गांठ पड़ जाती है। आज के दिन हमें भूलना है और सभी गांठों को तोड़ देना है। जिस तरह खमतखामणा जरूरी है, उसी तरह प्रायश्चित्त करना जरूरी है। प्रतिक्रमण किया और प्रायश्चित्त का भाव नहीं रखा तो उसका फल प्राप्त नहीं होगा। हमारी गति विराधक हो जाती है। कार्यक्रम में मुनि विमलविहारी जी, मुनि प्रबोध कुमारजी, साध्वी कृतार्थप्रभा जी, साध्वी वैभवयशा जी, साध्वी आगमप्रभा जी, साध्वी आर्यप्रभा जी एवं साध्वी मध्यस्थप्रभा जी ने विभिन्न विषयों पर अपने विचार व्यक्त किए।

वाशी

पर्युषण महापर्व का प्रथम दिवस खाद्य संयम दिवस के रूप में तेरापंथ समाज वाशी द्वारा अणुव्रत सभागार वाशी नवी मुंबई में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से किया गया। मंगलाचरण तेरापंथ महिला मंडल वाशी तथा स्वागत वक्तव्य श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा अध्यक्ष पंकज चंडालिया द्वारा दिया गया। तेयुप अध्यक्ष अरविंद खटेड, तेरापंथ महिला मंडल

अध्यक्ष रेखा कोठारी ने अपने विचार व्यक्त किए। प्रवक्ता उपासक दिनेश कोठारी ने प्रेक्षा ध्यान के प्रयोग के पश्चात खाद्य संयम दिवस के बारे में वर्णन किया। आपने कहा- जिस प्रकार सूखी घास में छोटी सी चिंगारी लगाने पर घास जल जाती है, उसी प्रकार तप के आतप से कर्म भस्म हो जाते हैं, निर्जित हो जाते हैं। इसलिए अपनी शक्ति के अनुसार अधिक से अधिक तपस्या करनी चाहिए। उपासक जयंतिलाल बरलोटा ने खाद्य संयम विषय पर अपने विचार रखे। उपासक लक्ष्मीलाल सिंघवी ने बताया कि खाद्य संयम के दिन कम से कम उपवास या द्रव्य संयम करना चाहिए। उन्होंने उपासक आचार संहिता तथा श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया।

स्वाध्याय दिवस का मंगलाचरण तेरापंथ महिला मंडल वाशी नवी मुंबई द्वारा किया गया। प्रवक्ता उपासक दिनेश कोठारी दुबई ने उत्तराध्ययन और दशवैकालिक आगमों के आधार पर बताया कि स्वाध्याय से ज्ञानावरणीय कर्मों का क्षय होता है। पहले ज्ञान प्राप्त करके फिर ही दया धर्म का पालन किया जा सकता है। उपासक जयंतिलाल बरलोटा थाना ने बताया कि स्वाध्याय के पाँच प्रकार हैं- वाचना, पृच्छना, परिवर्तना, अनुप्रेक्षा, धर्मकथा। उपासक लक्ष्मीलाल सिंघवी ने बताया कि स्वाध्याय से ज्ञान प्राप्त होता है। जैसे दूध प्राप्त करने की विधि का ज्ञान जरूरी है उसी तरह मोक्ष जाने के मार्ग का ज्ञान जरूरी है। वाणी संयम दिवस पर मंगलाचरण ज्ञानशाला परिवार वाशी द्वारा किया गया। उपासक दिनेश कोठारी वाणी संयम दिवस पर बताया कि ऐसी बोलें जो दूसरों को भी शीतलता प्रदान करे और स्वयं को भी शीतल बनाए। जयंतिलाल बरलोटा ने समझाया कि ज़्यादा बोलना भी अनिष्टकारी हो सकता है। उपासक लक्ष्मीलाल सिंघवी ने बताया कि कोयल मीठी वाणी बोलकर सब को अपना बना लेती है। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथ महिला मंडल सहमंत्री विजेता भंसाली ने किया। अणुव्रत चेतना दिवस कार्यक्रम का मंगलाचरण अणुव्रत समिति क्षेत्रीय संयोजक वाशी द्वारा किया गया। अणुव्रत गीत भिक्षु भक्ति मंडल वाशी द्वारा किया गया। उपासक दिनेश कोठारी ने कृष्ण लेश्या के लक्षणों का विस्तार से वर्णन करते हुए, कृष्ण लेश्या के भावों से बचने की प्रेरणा दी। जयंतिलाल बरलोटा ने अणुव्रत के नियम बताते हुए समझाया कि विश्व-शांति के लिए अणुव्रत बहुत लाभकारी सिद्ध हो सकते हैं। उपासक लक्ष्मीलाल सिंघवी ने श्रावक की 11 प्रतिमाओं के बारे में विस्तार से बताया।

कार्यक्रम का संचालन ज्ञानशाला परिवार वाशी सह संयोजिका सोनिया सिंघवी ने किया। जप दिवस पर मंगलाचरण प्रेक्षा प्रशिक्षका वाशी द्वारा किया गया। उपासक दिनेश कोठारी ने कहा कि चतुर्विंशति स्तव से दर्शन की विशुद्धि होती है। स्तवन, स्तुति से ज्ञान, दर्शन, चरित्र और बोधि का लाभ प्राप्त होता है। उपासक जयंतिलाल बरलोटा ने कहा ध्वनि और शब्दों में शक्ति होती है। जैसे युद्ध के नगाड़ों से जोश आता है वैसे ही मंत्र भी प्रभावशाली होते हैं। उपासक लक्ष्मीलाल सिंघवी ने शालिभद्र की कहानी सुनाई। कार्यक्रम का संचालन ज्ञानशाला परिवार वाशी मुख्य सह संयोजिका सेजल सियाल ने किया।

ध्यान दिवस का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से किया गया। मंगलाचरण तेरापंथ महिला मंडल कोपरखैरना द्वारा किया गया। प्रवक्ता उपासक दिनेश कोठारी ने बारह व्रती श्रावक बनने की प्रेरणा देते हुए तैजस लेश्या के लक्षणों की विस्तार से चर्चा की। आगम में बताए गए ध्यान के प्रकारों की चर्चा करते हुए बताया कि व्यक्ति को आर्त ध्यान व रौद्र ध्यान से बचना चाहिए तथा धर्म ध्यान व शुक्ल ध्यान में रमना चाहिए। उपासक जयंतिलाल बरलोटा ने बताया कि ध्यान से तत्व विज्ञान, वैराग्य, निर्ग्रन्थता, अनासक्ति, समचित्तता, परिषह पर विजय प्राप्त होती है। उपासक लक्ष्मीलाल सिंघवी ने मधुर गीत 'हंस उड़ा तो अकेला उड़ा' के माध्यम से एकत्व भावना और अन्यत्व भावना का प्रयोग करने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम का संचालन रेखा मेहता ने किया। संवत्सरी महापर्व के रूप में कार्यक्रम तेरापंथ समाज वाशी द्वारा गोल्ड क्रेस्ट वाशी नवी मुंबई में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से किया गया, मंगलाचरण कन्या मंडल वाशी द्वारा किया गया। प्रवक्ता उपासक दिनेश कोठारी ने प्रेक्षा ध्यान का प्रयोग करवाया एवं भगवान ऋषभ, भगवान नेमिनाथ, भगवान पार्ष्व के जीवन वृत्त को संक्षेप में बताया। पद्म और शुक्ल लेश्या के लक्षणों की चर्चा की। उपासक जयंतिलाल बरलोटा ने भगवान महावीर के पूर्व भवों और उनके सर्वज्ञ काल की चर्चा की। उपासक लक्ष्मीलाल सिंघवी ने भगवान महावीर के जन्म से लेकर उनके साधना काल की चर्चा की। दूसरे चरण में तपस्वियों का सम्मान किया गया। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम वाशी के अध्यक्ष दिलखुश मेहता ने 10 छात्रों को मेधावी छात्रों का सम्मान से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथ सभा के परामर्शक चेतन कोठारी ने किया।

संयम से आत्मा को भावित करने का पर्व है पर्युषण

राजलदेसर

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की सुशिष्या 'शासनश्री' साध्वी मानकुमारी जी ठाणा 7 के सान्निध्य में महापर्व पर्युषण का मंगल महामंत्रोच्चार के साथ आध्यात्मिक रूप में शुभारम्भ हुआ। साध्वीश्री ने धर्म सभा को संबोधित करते हुए कहा पर्वों की परंपरा भारतीय संस्कृति में ही नहीं विश्व की समग्र संस्कृति में अपना विशेष महत्व रखती है। पर्व का अर्थ है आनंद का अवतरण। पर्व का अर्थ है संस्कृति की साक्षात् अवगति। पर्युषण महापर्व सब पर्वों का राजा होने के कारण पर्वधाराज महापर्व कहलाता है। यह आध्यात्मिक पर्व है। इस आराधनाकाल में चारित्रात्माओं का ही नहीं, श्रावक-श्राविकाओं का भी विशेष सहभाग होता है। यों तो आदमी प्रतिदिन धर्माधना करता है, किन्तु सामूहिक और समयानुकूल धर्माधना का यह विशेष अवसर होता है। प्रथम दिन खाद्य संयम दिवस के रूप में समायोज्य है। भोजन करने के दौरान संयम रखना अति आवश्यक है। खाद्य संयम की प्राणशक्ति है अनासक्ति। अनासक्ति के साथ और स्वास्थ्य के अनुकूल भोजन हो तो अच्छा रह सकता है। इस अवसर पर खाद्य संयम गीत का संगान किया गया।

स्वाध्याय दिवस का शुभारंभ साध्वी कमलयशा जी व साध्वी चैत्यप्रभा जी के मंगलाचरण से हुआ। साध्वी मानकुमारी जी ने धर्म सभा को संबोधित करते हुए कहा निर्जरा के बारह भेदों में एक भेद स्वाध्याय है। स्वाध्याय को सभी धर्मों में महत्व दिया है। जैसे शरीर के लिए भोजन आवश्यक है वैसे ही आत्मा के लिए स्वाध्याय आवश्यक है। स्वाध्याय करते-करते व्यक्ति अपनी आत्मा को उज्ज्वल बना लेता है। स्वाध्याय के लिए तीन बातें आवश्यक हैं एकाग्रता, नियमितता व निर्विकारिता। साध्वी कमलयशा जी ने विषय की प्रस्तुति करते हुए स्वाध्याय की महत्ता बतायी। साध्वी स्नेहप्रभा जी ने भगवान सुमतिनाथ के जीवन पर प्रकाश डाला। सामायिक दिवस के अवसर पर अभिनव सामायिक का क्रम नियोजित किया गया।

वाणी संयम दिवस पर साध्वी कीर्तिरेखा जी ने भगवान महावीर की भव परंपरा बताते हुए 'नयसार' के भव में सम्यक्त्व प्राप्ति की सरस प्रस्तुति दी। साध्वी मानकुमारी जी ने कहा वाणी संयम जीवन के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। व्यक्ति को मुरली सम बनना चाहिए।

बिना बुलाए ना बोले, बोले तो मधुर बोले व सरलता से बोले। साध्वी इन्दुयशा जी ने 'वाणी वीणा बने' विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। साध्वी कुशलप्रज्ञा जी ने तीर्थंकर धर्मनाथ पर सारगर्भित प्रस्तुति दी।

अणुव्रत चेतना दिवस के अवसर पर साध्वीश्री ने कहा कि व्यक्ति के भीतर व्रत की चेतना जागे। व्रत हमारे जीवन को बुराइयों से उबार लेता है। एक छोटा सा नियम भी हमारे जीवन में आमूल चूल परिवर्तन कर देता है। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल के मंगलाचरण से हुआ। साध्वी कीर्तिरेखा जी ने अणुव्रत के नियमों की व्याख्या करते हुए सभी को अणुव्रती बनने का आह्वान किया। साध्वी इन्दुयशा जी ने 'मानव की पहचान मानवता से' विषय पर प्रस्तुति दी। साध्वी चैत्यप्रभाजी व साध्वी कमलयशा जी ने सुमधुर गीत का संगान किया।

जप दिवस पर साध्वी मानकुमारी जी ने श्रावक समाज को संबोधित करते हुए कहा- सभी धर्मों में जप को महत्व दिया गया है। जप उच्चारणपूर्वक किया जाता है और मानसिक जप भी होता है। मंत्रों का महत्व बहुत है, साथ में बीजाक्षर जुड़ जाए तो वह मंत्र और अधिक शक्तिशाली बन जाता है। वही जप परिणाम देता है जो अर्थ, बोधपूर्वक किया जाता है। उसी जप में आनंद की अनुभूति होती है। साध्वी कीर्तिरेखा जी व साध्वी चैत्यप्रभा जी ने जप पर अपने विचार व्यक्त किए। मंजू देवी बाफना ने सुमधुर गीत का संगान किया। इससे पूर्व साध्वी कीर्तिरेखा जी ने भगवान महावीर की २७ भव परंपरा के अन्तर्गत विश्वभूति के निदान की व्याख्या की।

साध्वी मानकुमारीजी ने ध्यान दिवस पर संबोधित करते हुए कहा- ध्यान चित्त की एकाग्रता से है। ध्यान में व्यक्ति को संकल्प- विकल्पों से रहित होकर आत्मावलोकन करना होता है। ध्याता, ध्येय और ध्यान इन तीन शब्दों का सारगर्भित विश्लेषण करते हुए साध्वीश्री जी ने कहा ध्यान केवल आंख मूंदना नहीं, आत्मा रूपी खजाने को प्राप्त करना है। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी कमलयशाजी व साध्वी चैत्यप्रभाजी द्वारा 'प्रेक्षा ध्यान में डुबकी लगा' गीत के मंगलाचरण से हुआ।

साध्वी स्नेहप्रभा जी ने 'ध्यान जीवन का आनंद' विषय पर सुन्दर अभिव्यक्ति दी। इस अवसर पर साध्वी कीर्तिरेखा जी ने भगवान महावीर की भव परंपरा में 'त्रिपृष्ठ वासुदेव' के जीवन

की सरस प्रस्तुति करते हुए भव परंपरा के बारे में बताया।

संवत्सरी महापर्व के सुअवसर पर साध्वी मानकुमारी जी ने उपस्थित धर्म परिषद् को संबोधित करते हुए कहा- संवत्सरी आत्मावलोकन का पर्व है, यह हमें भीतर झांकने की प्रेरणा देता है। राग-द्वेष की ग्रंथियों को तोड़, मैत्री मंदार का आनंद लें। हमें त्याग व संयम का पुरुषार्थ कर अपने भीतर जमी हुई वासनाओं को उखाड़ कर अपनी आत्मा का कल्याण करना है। संवत्सरी क्यों? कब? और कैसे मनाएं? विषय पर सारगर्भित विचार व्यक्त करते हुए शासनश्री साध्वीश्री ने संवत्सरी के महत्व को बताया। कार्यक्रम में साध्वी स्नेहप्रभा जी ने आगम वाणी का आस्वादन कराया। साध्वी इन्दुयशा जी ने भगवान महावीर के जन्मोत्सव से दीक्षोत्सव तक की सरस प्रस्तुति दी। साध्वी कीर्तिरेखा जी ने भगवान महावीर के साधना काल का रोमांचक वर्णन किया। साध्वी चैत्यप्रभा जी ने चंदनबाला की झांकी सुमधुर रागिनी में सुनाई। साध्वी स्नेहप्रभा जी ने प्रभावक आचार्य व साध्वी कमलयशा जी ने तेरापंथ के आचार्यों की यशस्वी परंपरा की सुन्दर प्रस्तुति दी। महिला मंडल ने सुमधुर गीत का संगान किया। संवत्सरी महापर्व पर अच्छी संख्या में उपवास, पौषध कर धार्मिक आराधना की गई।

क्षमापना दिवस कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीवृंद के मैत्रीगीत के साथ हुआ। इस अवसर पर साध्वी मानकुमारीजी ने कहा- हमने आठ दिन पर्युषण महापर्व की आराधना की। आठ दिन का निचोड़ है- क्षमापर्व। सरलमना होकर हमने राग-द्वेष को कितना कम किया है। किसी के साथ मनमुटाव यदि हुआ है तो आज के दिन खमतखामणा करके अपने मन को हल्का बना ले। आज के दिन खमतखामणा न करने का अर्थ है अपने सम्यक्त्व रूपी रत्न को खो देना।

साध्वी कुशलप्रज्ञा जी ने क्षमा पर्व पर अपने विचार रखते हुए सबके साथ मैत्री भाव रखने की प्रेरणा दी। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा राजलदेसर के अध्यक्ष राजकुमार बिनायक ने विराजित सभी साध्वी वृंद से खमतखामणा करते हुए श्रावक समाज से सरलमना क्षमायाचना की। सभा के न्यासी पन्नालाल दुगड़, महिला मंडल मंत्री रीना बैद, युवक परिषद् अध्यक्ष मुकेश श्रीमाल ने क्षमा पर्व पर अपने सारगर्भित विचार व्यक्त किए। संचालन सभा के मंत्री कमल दुगड़ ने किया।

बोलती किताब

जीवन की पोथी



ध्यान का एक बहुत बड़ा परिणाम है - आज को समझना, वर्तमान को समझना और वर्तमान के साथ मैत्री स्थापित करना। आदमी जो कुछ करता है, वह अतीत की प्रतिक्रिया है। आदमी जो कुछ करता है, उससे भविष्य जुड़ा हुआ है। एक फसल की कटाई हो रही है और एक बीज की बुआई हो रही है। जो अतीत है, वर्तमान में उस फसल की कटाई हो रही है। भविष्य आज की बुआई है। आज जो बीज बोया जा रहा है वह भविष्य बनेगा। यह फसल की कटाई और बीज की बुआई दोनों वर्तमान में होते हैं।

स्व का विश्लेषण करें - अपने व्यक्तित्व का विश्लेषण करना, यह बहुत बड़ा काम है। जो अपने मूल तक पहुंच जाता है, उसके सामने गांठ को खोलने का सूत्र प्रस्तुत हो जाता है। जब तक यह सूत्र हस्तगत नहीं हो जाता, तब तक आदमी नहीं जान पाता कि अमुक बुराई की बुआई कब, कैसे हुई थी? वहां पहुंचे बिना इस पोथी को उखाड़ा नहीं जा सकता।

आरोहण के लिए जरूरी है जागरूकता - एक आदमी ऊंचाई पर खड़ा था और दूसरा नीचे। ऊंचाई पर खड़े मनुष्य ने कहा- 'अरे? अमुक आदमी आ रहा है।' नीचे खड़े व्यक्ति ने कहा- 'नहीं, कोई नहीं आ रहा है। मुझे तो कोई आता हुआ दिखाई नहीं देता।' वह बोला- 'मुझे स्पष्ट दीख रहा है कि वह आ रहा है।' जो ढलान में खड़ा है उसे दिखाई नहीं दे रहा है और जो चोटी पर खड़ा है उसे दिखाई दे रहा है। उसने कहा-तुम भी ऊपर आ जाओ, दिखाई देने लगेंगे।'



पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :

आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती

+91 87420 04849 / 04949 <https://books.jvbharati.org> books@jvbharati.org

ज्ञान भी सीमातीत हो - शक्ति भी असीम। इन सबको मिलाएं तो हमारे आदर्श की प्रतिमा बन जाएगी और उस आदर्श की प्रतिमा का नाम है ईश्वर। वह अनंत ज्ञानमय, अनंत शक्ति-संपन्न, अबाधित सुख-संपन्न, अजर और अमर होगा। अगर आपने उस आदर्श की प्रतिमा को बना लिया है तो बहुत अच्छी बात है। अगर नहीं बनाया हो तो बना लें। है तो बहुत अच्छी बात, अगर नहीं है तो इस प्रकार के ईश्वर का हमें निर्माण करना है। हमें उस अवस्था में पहुंचना है, जहां ये सारी बातें मिलती है।

आज का युग मानसिक तनाव का युग है - आज पदार्थों की बहुलता है। सामने पदार्थ बहुत हैं। आज का बाजार तड़कीला-भड़कीला है, तड़क भड़क बहुत है। इतनी दुकानें हैं कि कहीं पार ही नहीं है। किसी बड़े शहर में चले जाओ, ऐसा लगता है कि न आर, न पार, बाजार में हजारों-हजारों चीजें। हजारों-हजारों प्रकार की वेराइटी, कोई अंतर ही नहीं है। अब मन का काम रहा कि जिसको देखे उसको मांगे। अगर उस मांग के साथ चला जाए, वहा जाए तो अशांति और बेचैनी के सिवाय कुछ भी नहीं मिलेगा, तनाव ही तनाव होगा।

आदमी दुःख का अनुभव नहीं करता - वह दुःख को सहज ही भोगता चला जा रहा है। उसे अनुभव ही नहीं हो रहा है कि दुःख है। मल का कीड़ा मल में ही प्रसन्न रहता है। उसे दुःख का अनुभव ही नहीं होता। सूअर से कहा गया कि मैं तुम्हें दूसरी योनि में बदल दूंगा। उसने कहा-मत बदलो, मुझे यहीं रहने दो। यहां मेरी पत्नी है, मेरा बच्चा है और मेरा परिवार है। इसे छोड़ भला मैं दूसरी योनि में कैसे जा सकता हूं? सूअर भी सूअर योनि को छोड़ना नहीं चाहता और कुत्ता भी कुत्ते की योनि को छोड़ना नहीं चाहता, क्योंकि उसमें मूछा है।

भिक्षु चरमोत्सव पर कार्यक्रम आयोजित

डॉ.बिबली

भिक्षु चरमोत्सव कार्यक्रम के अवसर पर उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमार जी ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि आचार्य भिक्षु ज्ञानवान, धृतिमान, गतिमान पुरुष थे। उन्होंने ज्ञान और धैर्य के साथ हर समस्या का समाधान किया। कहावत है- धीरज का फल मीठा होता है। हम देखते हैं जैसे-जैसे समय व्यतीत हो रहा है, वैसे-वैसे उसे संत और पंथ की गरिमा द्रोपदी के चौर की तरह बढ़ती जा रही है। जो तेरापंथ भिक्षु स्वामी के समय राजस्थान तक सीमित था, वह आज देश-विदेश में भी अपनी पहचान व स्थान बना पाया

है। आवश्यकता है कि हम स्वामीजी के सिद्धांतों को समझें, औरों को समझाने का प्रयास करें, जिससे आत्म कल्याण के साथ-साथ जनकल्याण भी हो सके। मुनि अमन कुमार जी, मुनि नमि कुमार जी, मुनि मुकेश कुमार जी ने भी अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए। तेरापंथ सभा के मंत्री भगवतीलाल जैन, तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष सीमा कोठारी, तेरापंथ युवक परिषद् के मंत्री संजय खाब्या ने श्रद्धासिक्त गीतों का संगान किया। कार्यक्रम में मुनि नमिकुमार जी ने 18 दिन की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। भिक्षु चरमोत्सव के अवसर पर तेरापंथ भवन में ओम भिक्षु का अखंड जाप भी आयोजित किया गया।



पदार्थों में न हो मोह, आसक्ति अथवा राग-द्वेष : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।

19 सितम्बर, 2024

जिन वाणी के व्याख्याता, महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमणजी ने आचार्य आगम की विवेचना करते हुए फरमाया कि दुनिया में जितने भी पदार्थ हैं, उन्हें दो भागों में बांटा जा सकता है- काम और भोग। शब्द और रूप काम है। गंध, रस और स्पर्श ये तीन भोग हो जाते हैं। शब्द हमारे कान में पड़ जाते हैं पर हम उसे देख नहीं पाते, रूप भी दूर है, आँख के अन्दर नहीं पड़ता है, नाक द्वारा गंध ग्रहण की जाती है, रस को जीभ द्वारा जाना जा सकता है, स्पर्श भी शरीर के लगता है, तब पता चलता है।

श्रोत्र व चक्षु इन्द्रिय को कामी कहा गया है, शेष तीन इन्द्रियां भोगी कहलाती है। काम-भोग तृप्ति देने में सक्षम-समर्थ नहीं है, इनसे अतृप्ति और बढ़ सकती है। इन्द्रिय विषय का भोग करने पर भी शाश्वत-स्थायी सुख नहीं मिलता, ये दुःख के कारण बन सकते हैं। इन्द्रिय विषयों से शाश्वत शान्ति नहीं मिलती है। अग्नि में ईंधन डालने से वह तृप्त नहीं होती और बढ़ती जाती



है। शब्द, रूप, गंध, रस और स्पर्श से सुख की कामना नहीं करनी चाहिये। हमें तो इन्द्रियतीत सुख की, मोक्ष की कामना करनी चाहिये। वर्तमान में यदि काम-भोगों से अनासक्त हो जायें, संतोष को अपना लें तो आन्तरिक सुख की अनुभूति हो सकती है।

साधु को आहार-पानी मिल सके तो ठीक, न मिले तो भी ठीक है। अगर आहार-पानी नहीं मिला तो तपस्या हो जायेगी, आत्मा को पोषण

मिल जायेगा और मिला तो शरीर को पोषण मिल जायेगा।

भगवान ऋषभ को साधिक 13 महीने तक आहार नहीं मिला, वर्षीतप हो गया। वर्तमान में वर्षीतप चलता है वह आसान है पर भगवान ऋषभ का तो विशिष्ट वर्षीतप था।

पदार्थ-काम-भोग हमारे साधन बन सकते हैं। शरीर को भाड़ा देना पड़ता है, तभी शरीर चलेगा। पदार्थ का उपयोग करें, पर पदार्थों में मोह, आसक्ति या

राग-द्वेष न हो। साधना की दृष्टि से पदार्थों के प्रति संयम रखें, ऊनोदरी करें। इच्छा परिणाम व्रत और उपभोग परिभोग परिणाम व्रत भी संयम की साधना है। समय जा रहा है, हम समय का अच्छा धार्मिक साधना-आराधना में उपयोग करते रहे। संसार से मुक्ति के लिए काम-भोगों से अनासक्ति रखें।

बड़ी दीक्षा

मंगल प्रवचन के उपरान्त आचार्यश्री ने सात दिन पूर्व दीक्षित हुई दो साध्वियों

को बड़ी दीक्षा (छेदोपस्थापनीय चारित्र) प्रदान किया। आर्षवाणी का उच्चारण करते हुए आचार्यश्री ने नवदीक्षित साध्वियों को छेदोपस्थापनीय चारित्र में स्थापित करते हुए पावन आशीर्वाद प्रदान किया।

जैन संस्कार विधि राष्ट्रीय सम्मेलन का मंचीय कार्यक्रम

आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में आयोजित द्विदिवसीय जैन संस्कारक राष्ट्रीय सम्मेलन के दूसरे दिन मंचीय कार्यक्रम में अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा तथा मुख्य प्रशिक्षक डालमचन्द्र नौलखा ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। जैन संस्कारकों ने समूह गीत की प्रस्तुति दी।

पूज्यवर ने आशीर्चन फरमाते हुए कहा कि जीवन में अनेक प्रसंग आते हैं। गृहस्थों के संसार में संस्कार रहें, उनमें संयम और सादगी को प्रश्रय मिले, साथ में आर्षवाणी का भी उपयोग हो। आर्षवाणी और सादगी से संस्कारों में वृद्धि होती है।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

सेवा में शुद्धता के लिए साथ न जोड़ें कामना : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।

21 सितम्बर, 2024

तीर्थंकर के प्रतिनिधि परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी ने जिनवाणी का रसास्वाद करते हुए फरमाया कि आचार्य आगम के दूसरे अध्ययन में दो शब्द प्राप्त होते हैं- अनुस्रोत और प्रतिस्त्रोत। संसार व इन्द्रिय विषयों में बहना अनुस्रोत है, त्याग-संयम में प्रतिस्त्रोतगामिता हो जाती है। सामान्य आदमी अनुस्रोतगामी हो जाता है। साधु, साधक स्रोत के प्रतिकूल चलने वाला होता है। स्रोत के विरुद्ध में चलना कुछ कठिन होता है।

सामान्य आदमी परिग्रह की बुद्धि रखने वाला, ममत्व का भाव, आसक्ति रखने वाला होता है। जो साधक-साधु अणुगार है, वह दृष्टा है पर वह पदार्थों के प्रति आसक्ति, परिग्रह की बुद्धि नहीं रखता। गृहस्थों में भी यह साधना हो सकती है- आसक्ति से बचना और ज्ञाता-दृष्टा भाव में रहना। परिवार के दायित्व को तो निभाना पड़ता है, पर समय अनुसार निवृत्ति की दिशा में आगे बढ़ने का प्रयास हो। सेवा साधक श्रेणी भी साधना का अंग है। साधु

को तो अनासक्ति की मूर्ति होना चाहिये। गृहस्थ भी साधना करने वाले बनें। आसक्ति से गाढ़ कर्म का बन्ध हो सकता है। अनासक्ति से कर्मों का हल्कापन रह सकता है। चौदहवें गुणस्थान में बन्ध नहीं है, ग्यारहवें, बारहवें, तेरहवें में सिर्फ योगरूप बन्ध होता है, कषाय नहीं है। मनुष्य के व्यवहार है तो योग तो रहेगा पर कषाय मंदता का प्रयास हो। साधक व्यक्ति ज्यादा से ज्यादा कषाय मुक्त रहने का प्रयास करे। विवेक-अनासक्ति रहे, जितना हो सके आरम्भ-संसारंभ से बचें। जीवन में अनासक्ति, नैतिकता और ईमानदारी रहे, पारदर्शिता रहे।

आचार्य प्रवर ने विशेष प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा सेवा साधक श्रेणी के लोग हैं तो सेवा निष्काम भाव से हो तो सेवा में शुद्धता रह सकती है। सेवा में शुद्धता के लिए सेवा के साथ कामना न जुड़े। सेवा के साथ साधना करने वाला सेवा साधक हो सकता है।

साध्वीवर्याजी ने अपने उद्बोधन में रोहिण्य चोर के प्रसंग को विवेचित करते हुए कहा कि सम्यक्त्व मोक्ष मार्ग की नींव है। सम्यक्त्व के बिना चारित्र भी प्राप्त



नहीं होता है। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के 49वें राष्ट्रीय अधिवेशन का मंचीय कार्यक्रम का पूज्यवर की सन्निधि में आयोजन हुआ। तेममं सूरत ने मंगलाचरण गीत की प्रस्तुति दी। राष्ट्रीय अध्यक्षा सरिता डागा ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। महामंत्री नीतू ओस्तवाल ने विकास की जानकारी दी। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की ओर से कमला कठोटिया को 'श्राविका गौरव' अलंकरण प्रदान किया गया। अभिनंदन पत्र का वाचन अभातेममं की पूर्व अध्यक्ष

पुष्पा बैद ने किया। सीतादेवी सरावगी प्रतिभा पुरस्कार डॉ. तारा दुगड़ व नीतू चौपड़ा को प्रदान किया गया। अभिनंदन पत्र का वाचन क्रमशः संरक्षिका शांता पुगलिया तथा उपाध्यक्षा सुमन नाहटा ने किया। पुरस्कार व सम्मान प्राप्तकर्ताओं ने अपनी अभिव्यक्ति दी।

साध्वीप्रमुखाश्री ने अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल व पुरस्कार व सम्मान प्राप्तकर्ताओं को प्रतिबोध प्रदान किया। आचार्यप्रवर ने इस अवसर पर पावन प्रतिबोध प्रदान करते हुए कहा कि

किसी भी संस्था के निर्माण का अपना उद्देश्य होता है। यह अच्छा महिलाओं का संगठन है। कहीं तेरापंथ समाज की महिलाओं का प्रतिनिधित्व करना है तो अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल वह नेतृत्व करने में सक्षम प्रतीत हो रही है। जितना हो सके धार्मिक-आध्यात्मिक सेवा देने का गतिविधियों को व्यवस्थित रूप में संचालित करने का प्रयास होता रहे। कार्यक्रम का संचालन अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल की मंत्री श्रीमती नीतू ओस्तवाल ने किया।

आत्मा के उर्ध्वारोहण के लिए करें तप-संयम की साधना : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।

17 सितम्बर, 2024

तेरापंथ के देदीप्यमान महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमणजी ने पावन मंगल पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि अंग आगमों में पहला आगम आयारो है। इसमें छोटे-छोटे श्लोकों में निर्देश दिये गये हैं जिनसे मनुष्य के अप्रमाद, आत्मलीन, अध्यात्मलीन बनने का पथ प्रशस्त हो सकता है। इस हेतु तीन उपाय बताये गये हैं- शान्ति संप्रेक्षा, मरण संप्रेक्षा और अनित्य संप्रेक्षा।

शान्ति का अर्थ है निर्वाण - मोक्ष। मोक्ष के बारे में संप्रेक्षा-चिन्तन किया जाता है, आत्मा जन्म-मरण, जन्म-मरण करती है, उस जन्म-मरण के चक्र से छुटकारा मिले। शान्ति संप्रेक्षा से अप्रमाद की स्थिति का विकास हो सकता है। दूसरी संप्रेक्षा- मरण संप्रेक्षा। संसार में मृत्यु होती है। मरण यानि संसार। संसार में जन्म-मरण बार-बार का यह क्रम चलता है। विभिन्न योनियों में जीव जाते हैं, कहीं कष्ट पाते हैं, कहीं सुख भी पाते हैं। संसार के बारे में भी संप्रेक्षा करने से अप्रमाद का विकास होता है।

तीसरी अनुप्रेक्षा है- अनित्यता। यह शरीर अनित्य है। हम शरीर के बारे में चिन्तन करते हैं तो हमारा मोह भाव कम हो सकता है। अनन्त काल से



हमारे भीतर मोह का प्रभाव है। मोह कई बार इतना सघन हो जाता है कि उसको भेदना-तोड़ना, खत्म करना कठिन काम हो सकता है। मोह का आवरण होने से अज्ञान रहता है। संयोग होता है, उसका वियोग भी होता है। एक आत्मा शाश्वत है, जो ज्ञान-दर्शन युक्त है।

आदमी सोचे- मैं इस दुनिया में स्थायी बनकर नहीं आया हूँ। राही हूँ, आया हूँ तो कभी यहां से विदाई भी लेनी है। आत्मा अमर है, पर शरीर मृत्यु सहित है। उम्र का कोई भरोसा नहीं है, मृत्यु कभी भी प्राप्त हो सकती है। शरीर का परिवर्तन हो जाता है, पर आत्मा कभी नहीं मरती है। जब तक मोक्ष नहीं होता नया-नया शरीर मिलता रहता है। दुनिया

अनित्य भावना

राजा राणा छत्रपति, हाथिन के असवार।
मरना सबको एक दिन, अपनी-अपनी बार।

में स्थितियां भी अनित्य है। जिसको मित्र मान रखा था वह कभी दुश्मन भी बन सकता है। अपने पराये हो जाते हैं, सम्बन्ध का धागा कई बार टूट जाता है।

आत्मा नीची गति में न जाये, आत्मा का उर्ध्वारोहण हो, इस लिए तप-संयम की साधना करें। त्याग-तपस्या का बल है तो आशा करें आत्मा दुर्गति में नहीं जायेगी। जैन दर्शन में महाव्रत और अणुव्रत की बात आती है। साधु के लिए पांच महाव्रत तो गृहस्थों के लिए मध्यम मार्ग अणुव्रत है। अव्रत के साथ व्रत भी

है। श्रावकों के लिए बारह व्रतों की बात आती है। श्रावक बारह व्रतों का पालन करे। बारह व्रतों की क्लास के बाद है-सुमंगल साधना की क्लास। उसमें और संयम करना होता है। हमारे यहां सघन साधना शिविर का क्रम भी शुरू हुआ है जिससे मुमुक्षा की ओर आगे बढ़ सकते हैं। इनसे त्याग-संयम की साधना का विकास होता है। व्रतों के पालन में भी जागरूकता रहे। आसक्ति छूटेगी, अनासक्ति बढ़ेगी तो चेतना निर्मल होगी और आगे सुगति भी प्राप्त हो सकेगी। आत्मा के साथ धर्म का टिफिन है तो आगे भी सुविधा रहेगी। छोटे-छोटे नियमों के पालन के प्रति निष्ठा होनी चाहिये। पूज्य प्रवर ने बारह व्रतों को ग्रहण करने

की प्रेरणा प्रदान की।

आचार्य प्रवर ने आगे फरमाया- आज दिनेशजी पधारे हैं। पहले भी मिलना हुआ था और आज सूरत में मिलना भी हो गया। आचार्य प्रवर ने उन्हें जीवन में त्याग-संयम, योग साधना के विकास का आशीष प्रदान किया। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के स्थापना दिवस के संदर्भ में आचार्य प्रवर ने फरमाया कि आज अभातेयुप का स्थापना दिवस है, साठ वर्ष पूरे हो रहे हैं। अभातेयुप एवं शाखा परिषदें खूब धार्मिक-आध्यात्मिक विकास करती रहें। राजेश सुराणा ने विश्व हिन्दू परिषद के दिनेश चंद्र का परिचय दिया। उन्होंने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। चतुर्दशी के संदर्भ में हाजरी वाचन किया गया। पूज्यवर ने मर्यादाओं को समझाते हुए प्रेरणा प्रदान करवायी तथा सूरत से विहार के बाद के यात्रा पथ की जानकारी दी।

द्विदिवसीय बारह व्रत दीक्षा सम्मेलन के संदर्भ में अभातेयुप के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि योगेशकुमारजी ने अपने उद्गार व्यक्त किए। अभातेयुप अध्यक्ष रमेश डागा एवं बारह व्रत प्रभारी रोहित दूगड़ ने अपने विचार व्यक्त किये। पूज्यवर ने बारह व्रत स्वीकार करने वालों को प्रत्याख्यान करवाये।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियां

